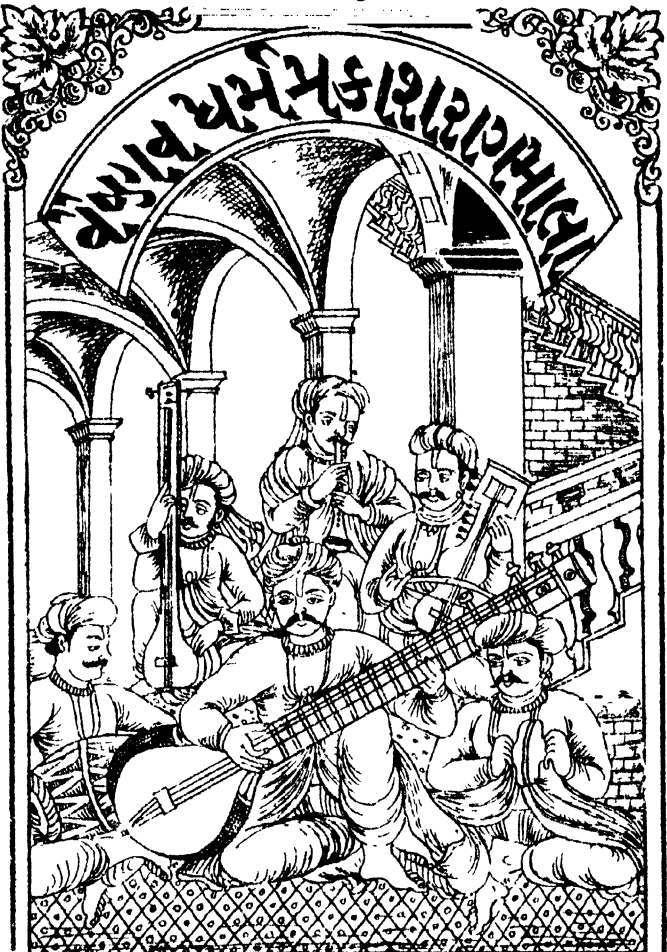


५१३८

$\frac{1V}{92}$ २५७

भागपेहेलो.



डॉ. मंत
आना

प्रसिद्ध करनार
धेलाभाई लीलाधर

सने
१८.८०
मुंबई.

स्वधर्मनीस प्रेस-मुंबई-भांडवी.

વૈષ્ણવ ધર્મ પ્રકાશ રાગમાળા

ભાગ પેહલો.

દાહા.

જે ખાની દાંની સુમતિ ગુનખાની જગમાત,
સુખસાની તેરી કૃપા ચાહત નિત અવદાત.

આરતી.

મંગલ આરતી શ્રી હરિહરકી બ્રહ્માદિક સુરમાજે । કનકચાર
કંરપુરકી ખાતી જગમગ જોતિ ખિરાજે ॥ સ્યામ સેતધન
કુંદસાહાવનકો ટિન્હર બિહબિહાજે । મણિગણુહારમાલ
અહિગણુકો ખામશિવાશ્રી બ્રાજે ॥ ગાનકરત સબદેવમનોહર
બહુબિધિબાજનખાજે । રતનસિંહાસન બલકત પ્રભુકે દેખમ
નોભવ ભાજે ॥ સારદશેષ સિદ્ધગુન ગાવત છોડીસકલબ્રમ-
કાજે । બિશ્વરૂપમહિમાહરિહરકો ગાવત શૃતિ સિરતાજે ૧ ॥

ભજન.

પરબ્રહ્મ ધન તુમહારી માયા જીન યહ જગત લુભાયા હે ।
કોષ અંધા કોષ લુલા કાના કોષ સુન્દર બરન બનાયા હે ।
કોષ દરિદ્ર કિયા નાથ કોઈ સંપતિ મેં બરમાયા હે ॥
કહિં ધરતી પર ધાસ ઉગતી કહિં અમૃત ઉપજાયા હે ।
કહિં બરખે કહિં ખુંદ ન પડતી, કહીં ધૂપ કહિં છાયા હે ॥
કોષ ઘોડે ચઢ મૂછ મરોડે કોઈ સંગ દોડાયા હે ॥
હરચરન કહે કરતાકી કુદરત કિયા પઠી જી ચાચ્છ હે ॥ ૧ ॥

भजन.

येत समेरे अनुओ मेरे अके दिन चलना होवेग, काम
कोष मड दोल मोहकी संपति लडुत जु गावेगा ।। पा
ट पडा टसका नहीं जवे पडा पडा मुभ जेवेगा ।। ल
भ करेड जानये जासा इनको नाके भोवेगा ।। पुंछ गछ
हाथ नहीं अहे लेभा दे दे रावेगा ।। जव पकड यभरा
ज लछ जछही पर पसारि सोवेगा ।। हरयरन कहे भज
राधाकृष्ण यही पाप तेरे भोवेगा ॥ २ ॥

भजन.

जग गया तय सोना क्यारे । जे नर तन देवनको दूदीन
सो पाया अय राना क्यारे ।। दारा सुवन सदन में इसी
के लार सणी का डोना क्यारे ।। हीरा हाथ अभोलभ पाया
हाथ भाव में जोना क्यारे ।। हाकुर सेां करि नेह अया
ना धन्दिन का सुभ होना क्यारे ।। जभ जैगम ज्ञान उर आ
या तय यांही औ सोना क्यारे ।। जे दाता मुभ माजे दे
वे तय कोही भ होना क्यारे ।। गिरिधरदास उदर पुरे प
र भीडा ओर सलोना क्यारे ॥ ३ ॥

भजन.

राम कृपीरी रंग अभीरी हमरी सेर नहीं हे ।। अंड मु
जाया जेइवा रंगा दिल वा रंग बही हे ।। याह यभारिन न
य नाय नयावे कुछ नहीं जत कही हे ।। तिलक लगाया कं
ही आंधी जोटी याह मही हे ।। तिलक लहाया मोह नदी
में भासा जत गही हे ।। छके पंजे में बड हरदम जुं
ग जुग डेर सही हे ।। भाभन तो अलगत गंवाया पाया
छाछ मही हे ।। जिसने पुरा भाव कथातिसकी साथ रही
हे ।। देव जतन कर राम मिलन की साथी सान बही हे ।। ४

लज्जन

काँई सक्ष न देया हिलका । साँया जना जिल मिलका ।
 काँई मकुला काँई भीसी देया पहिरे इकीरी पीलका ।
 आहेंर मुप से काम छंटता नीतर जैरा छिलका ।। राम
 लज्जन में जल्ल आलसी जेसे भरा मज्जलका । और न
 उ पिसमें में सुर्या पठतर दोठा सीलका ।। पठ गुने क
 छु जैसे वैसे महां धमंड अकिल का । जहरी सधुन मुप
 से निकले मंसल सांप के पीलका ॥ राम लज्जन पिनुं जप
 तप गुठा गुठा आस इज्जलका । क्या कहिये गुरदेव न
 पाया महोरम आंभ के तिलका ॥ ५

लज्जन

जन्त कस नहीं रे जहुरेया । कंवन पलंग पिछाना
 गुल गुल तकिया और दुलेया ।। ता छियर गलत किया
 याही लज्जने में राग देया । तीन जेर पाये के याही भी
 सरी दुध भलैयां ॥ अंतर मले लज्जनेकी जेरीया आलस
 ज्यो जमुहैया । जेलत दुंसत तीनी पन भीते पहुयल आ
 य मुहैया ॥ आछं व्ययानंक काल गरासी के छ ना करि हे
 सहैया, देव तनके मिल आप भाव हे द्विज से करत
 बंधैया ॥ स्वाम रंज में तनिक न आवत छोड कपट य
 तुरिया ॥ ६ ॥

हुमरी

यसुहा के पारे पारे पंसी इरे लज्जने ।। टेका पीतपसन
 की कछनी काँछे कुंज मलीन में डालत आछे छर अनमाल
 अल मनवाली नटवर वेष तुं आ जरे । कहे हरचरन छकी
 अज्जनारी रति रम्भा सुप जेहे छरे । कटिमदन सोल
 पर वारी अदलुत रूप दिआजरे । यसुहा के पारे १

(४)

कुमरी

कान्ह अरनेरी कीन्ही रे मोसो; कुंजमलिन में आन कान्ह
अरनेरी कीन्हीरे ॥टेका ॥ कुंवर कन्हाय यित लियोहे युराध
उसी अंसिया अलभ भति हर लीन्ही रे (कान्ह) कंसि
सुरकाय आय अंगुरी नयाय दधि दोन्ही हरकाय भटकी
छीनी रे (कान्ह) हरयरन कहे सारी हाढी वृजनारी गारी
दोन्ही अनवारी अनरीत कीन्ही रे । कान्ह अरनेरी कीन्ही
अरनेरी कीन्ही रे ॥ २ ॥

भेमरा

नयनन की भत भारो तरवरिया मेंतो धायल प्पिनु योह
अध रे कहर करेणे करिया ॥ कहे जो सान देत भोंडन की
कान्हर नेनन भरिया । हरियन्द प्पिन भारे भरत हभ भत
लाओ तीर कटरिया ॥ १ ॥

सोरठ

हभारे धर आर्धयो हो सुन्दर स्याम ॥टेका॥ मनभोहन अति
यतुर छपिले अगं अंभ अमिराम अरसाने सधकी
प्पिरिया कीरति णु क धाम । सप्पी इप करि परम अनु
पम स्यामा कडियो नाम ॥ तम में आय मिलुंगी तुम से।
आनंद आठो लम । गिरधरदास कहत बेां राधा नभ
सिभ इप ललाम ॥ १ ॥

कौरवी

सुभिशे मन प्रातकाल शुष्मनिधि गिरधरनलाल पंकज
भोयन भिसाल कुंकुमकी तिलक भाल अजीकी हर भोवि
माल आवत लठकीती याल ॥ कुंडल सत ससी प्रकस
स्याम अलक ताके पास उहे सधल कीनो प्पस केषां प्पिनि

(५)

प्यास प्यास सिर पे लडकीती पाग देभादिं तिय गरि
सोहाग मोकुष के लुरि भाग आवतीं निहास हाथ ॥ कन्ध
धरे असन पीत भरसत नव प्रीत रीत सोभित नव नीत
भीत करुषा कर श्रीगोपाल । अस्सल पद कमल आस आवत
गिरधरनहास उर महीं भम डीने आस मोहन अतिही
कृपाल ॥ १ ॥

विहाग

उधो क्य अहे वृन्तराज । हम सय कर मुधि लछ पिसा
रेड बुलि राज समान ॥ अेक पलक सत कषप पिततुं
हे नदिं सुकृत कषु डान । करि अति प्रीत मोहनी उरे
प्रभु नटेवर सिरतान ॥ छन्दिय गषु गति लयेड यकित
अति लुमि अटेर लपि आण । विश्वरूप हरि सां कडियो
अस करिये सरनडी बाण ॥ १ ॥

महीार

आण होड जुसत रंग भरे. सजिसय साण हरे । हरित
कुंज पन लता हरित हे तरिवर हरित हरे हरित लुमि
नम हरी हरीमय पंछी हरित अरे ॥ हरित डिंडोला हरित
डार में हरित डोर नकरे ॥ हरित असन लुपन ओ आ
सन आमर हरित हरे । हरित सपी होड ओर जुलावत
मेध राग उयरे ॥ होड किशोर तेहि मध्य लसत हें ह
रित छत्र सिर धरे । कौर्णव डीर नोरगन क मिस देभा
दि देव अरे ॥ १ ॥

कनरी

कहे मोसे लुपरा लमाजे वांके मोहना । करके प्रीत लमडो
तण दीना मथुर नगरिया में अजे वांके मोहना ॥ कहे
नपसे मजे सैयां सुधिहु न लीनी कुपण सौत पनाजे

वांके मोहना ॥ काहे ॥ जमुना तट अंसीवट जोकुल जिन्दा
 अन जिसराये वांके मोहना ॥ काहे ॥ वा दिनकी. सुध लु
 ल गये सध धन मंग. दधि आये वांकी मोहना ॥ काहे ॥
 सावन मास धटा धन गरजे जिगुली यमक उरपाये वांके
 मोहना ॥ काहे ॥ भाटों में कजरारी अहरिया जमकी जुम
 भारि लाये वांके मोहना ॥ काहे ॥ लाल पिछाल भछ हे ग्या
 जिन पावस कडयां जिताये वांके मोहना ॥ काहे ॥ १ ॥

कजरी

असं अजय महल रे हमारे पतियां दस दरजवां जमे
 सध सपियां पिया के मनावे नहिं सुने अतियां ॥ करति
 कलोल हेभावत बोअहि नयन सधन दरसावे अनियां
 जिश्वर्य यह नगरि न अहे मेटि रे गधल दुअ अरसतियां

रेपता

सप्रीरी नन्द के नन्दन तेरे धर आज आवेगे.

(दोहा) तोपर वार उरअसी सुन राधीके सुजन ।

तुं मोहनके उर असी हे उरअसी समान ॥

तुही अेक उर असी हरिके दुल नही उरअसी

हरिके लग्नरौ उर असी हरिके तुही के मन भिजावे गे

सप्रीरी नन्द के नन्दन तेरे धर आज आवेगे १

(दोहा) जे अरसाने उर तेरे ते अरसाने नेह

हरि अरसाने आयहे रस अरसाने मेह ॥

तेरा यह देह अरसाना उन्हे का नेह अरसाना

दुतई मेह अरसाना अरस लाभो निजावे गे ।

सप्रीरी नन्द के नन्दन तेरे धर आज आवेगे ॥

(दोहा) लाल लाल सारी तेरी जे देप्री नन्दलाल

भछ लालसा री उन्हे देपत की छी कल ॥

धर नन बाप सारी हे उधर मन बाप सारी हे
 होनी दिव बापसारी हे भिन्न जेहर दिभावेगे ।
 सप्रीरी नन्द के नन्दन तेरे धर आण आवेगे ।

(टिप्पणी) अनवारी के पुत्र युन अनवारी जय भाल ॥
 अनवारी उर उर हरि जेयन, वारी पाव ॥
 अरी सधे अभी सुभ सेन अनवारी जेयनवारी
 नागर प्रभु स्वाम अनवारी लक्षक हृदे लगावेगे ।
 सप्रीरी नन्द के नन्दन तेरे धर आण आवेगे ॥२॥

गजल,

नहीं शक से शक्ति हे तथीयत आध जाती हे ।
 हे सो जय सामगे आती हे उन्नत आध जाती हे ॥
 भियावेगे सुअे सभ गु मे सामत आध जातीहे ।
 मेरे हीलके दृष्टत मुजये आधत आध जातीहे ॥
 तुंमारे छिन्ने रातो को जिस दम सरपटकता हुं ।
 जयां पर भाल के जिस वक्त लज्जत आध जातीहे ॥
 मुझे दरदे मुदयत ने किया हे नातवां लेकिन ।
 धयादत का जे वह आते हे ताकत आध जातीहे ॥
 हजरी गावियां जय तुम मुझे जे वजह देते हो ।
 तोमेरी भी जयां पर कुछ शीकायत आध जाती हे ॥
 मोरोवत तर्क की उस शोष ने मिल कर रक्षीभोसे ।
 भसल भसलुंर हे तासीर सुदयत आध जाती हे ॥
 सहर तक भिनतें करतेहि करते वस्त्र के सभ को ।
 य मुशकिल अेक हो भोसो की तोयत आध जाती हे ॥१॥

गजल.

क्यों भिला जलिन से न दिव दाय दिव अइसोस दिव ।
 थीयता हे क्या नइ दिव दाय दिव अइसोस दिव ॥

तेने आलम के किया हे कतल मेरे देपते ।
 गुज सीतमर से मिला दिल हाय दिल अहसोस दिल ॥
 किस परीङ्गे छिपाया दिल मेरा मिलता नहीं ।
 दुंढता दुं कया हुआ दिल हाय दिल अहसोस दिल ॥
 जनता था मे' कि वह आलम निपट ये रहम हे ।
 क्यों हुआ था मुप्पतिला दिल हाय दिल अहसोस दिल ॥
 देपकर उस मनहरन को मुझसे होकर अण्य जुदा ।
 किस तरह से रम गया दिल हाय दिल अहसोस दिल ॥
 किस्ने न पुछुं कहां दुंदुं निशा पाता नहीं ।
 क्या हुआ तायां मेरा दिल हाय दिल अहसोस दिल ॥२॥

गजल

किसी परदेनसीका हे शोक लका कोरि तरह अण्य असोपता
 हे मुझे । कि उठाके वह परदह सरमी हया जरा अपना जमा
 ल दीया हे मुझे ॥ तेरे देपने की तो हे से'कडो टप नहीं
 देपता मे' तो यही हे सण्य । कि तजली हुस्न से परके
 गजल कहीं ऐसा न हो कि जला हे मुझे ॥ मुझे कतल किया
 तोय उसने कहा कि तु' रंजे अण्य से छुट गया ।
 तेरे साथ य मे'ने सलुक किया मेरे कुस्तेनाज हुआ हे मुझे ॥
 रही छतनी भी ताकतो ताप नहीं कि जमी' से उठे
 अण्य य भाकनसी' । तेरे कुंये की सिमत पला से कहीं
 मेरा गिरिये शोक अहा हे मुज ॥ कछ जपम तो पाछ
 पर आण तन्नक मिली लज्जते छशक न जेरे कलक मेरे
 जपमे जगर पे छिडक के निमक मज छशक अहा का य
 भा हे मुज लगे पातका मेरे ठिकाना कहांकी जण्य अेक
 सपुन मे' वहुं सहरे पयां ॥ कबी अरस वरी पे यहा
 हे मुझे कबी इरस जमी' पे गिरा हे मुझे नहो दामे अला

यक निसभ अमर इहं गुलशन कदराही शेर नहर कोष
 ऐसा होकामिले पाक नहर किने कही जला से खुदाहे
 मुजे ॥ ३ ॥

गजल.

कुछ अजर पहले कटुरत ओ सहाध डीन थी वजह कोष
 सुलह ही सुरत लडाधकी न थी हमने तो ऐसा समज
 कर आसनाध की न थी य तवकंठ हमको तुजसे जेवहाध
 ही न थी ॥ थी मुकदर तुमसे दर न मेरे दिल का आधना
 जे कदुरतन्या छसे छाजत सहाधकी न थी लग गया था अ
 पहने कुंजे कइसमें अपना दिल । हमकी जे सेयाह कु
 छ परवा रिहाधकी न थी तुंने किरके दीहजे पुर आव से
 पांछीथी अरक । आज वो चूर्पी तेरे हस्ते छिनाधकी न थी
 दिल इरेभों में जे उसना आसना केया गया उसने
 क्या आज किसी से आसनाधकी न थी भाडानुं किरती लिये
 निकला था कजों मिरसे गदा हूंरन से तेरे तमना गर गदा
 धकी नथी ॥ जनते ये जेनसे गुजरेगी राते वरलकी हम
 नसीं हमको अजर रोजे गुहाध न थी ॥ गुल्ह उरकी हम
 से जल करने लगी नाहक नहर । दर न कोष अजह अंसी
 कज अदाध की न थी. ॥ ४ ॥

गजल.

गजल हे निस थुते काहिर पे अपना हम निकलता हे
 नया तथुते उसके कुंजे से हरहम निकलता हे ॥ न रथ
 आंभों पे मेरे आरतीने लुह जे हमहम किरके सुर्ष के
 हमराह दिल का गम निकलता हे. दिया कर अपनी आं
 राधश परी मुजको न घोआ दे किसीके सदाःपन में आरही
 आधम निकलता हे नही अनिर में लाता वह मेरे

आगुरद होने का ये सुन रहाहे जखिम ने इसा दिय क
 म निकलता हे ॥ समज कर अननवो से जिसे दिय का
 राज कहता हुं अजल होता हुं क्या जय जय वह तेरा
 महरम निकलता हे ॥ अना देता हे कुंये इकका टेढे को भी
 सीधा पिया जय जत्री में तार का सम अम निकलता
 हे ॥ सखीदो से नकी वाहिक हे हम हां छतना वाहिक हे
 कोछ रातो का या करता कुंया आतम निकलता हे ॥ ५ ॥

गजल.

वस्त्र के सम भाभियाना. धरमे ताना यांहिये ।
 अपनी मसरत यस्म गरदु से छियाना याहिये ॥
 अजम रिंदामे कीसीनी सरकभी जेया नहीं ।
 गरदने भीना को येसाकी जुकाना याहीये ॥
 नन्हे नन्हे हाथी पर काशी हे युवमे हंटीका रंग ।
 तुं अभी नादां हे क्या मेहेदी लगाना याहीये ॥
 कोछ रावो कोछ पीटा कोछ अपना सीर धुपे ।
 आके हरदम पान उनको मुम कुराना याहीये ॥
 रातोकी तन हान फिर हसराह आदिम हे जइर ।
 हिन नये महसरकी डोकर, से लगाना याहिये ॥
 अहते हे उसके गले में हर से परम भिन्नत के तउक ।
 अपने कदी की तुंजे भिन्नत अदाना याहिये ॥
 धशक मजनुं का सखीदी जेय सेलीने दया ।
 आशिके दिवाना का भाशुक दाना याहीये ॥ ६ ॥



लावणी.

अलिङ्ग आप गणपति: सभा में निरत करे नोअत अजती ।
 ये अरदानी जेला जिनकी दासी शक्ति अजला जिनके

गण्ड कहिये अलभेला सुन निकर शुनी ॥ तें ता गीते भाते
 संभु सैल करनको जाति नखाने पैडी गौरा भाते ज्या दिव
 घैठनी, सें भुष मिल के भाते अंका भेद छितारा तुरते पुत
 ला अनाया करणुगते विद्या का धनी ॥ (उडान) एम एव
 इसमें डाडा, हे नाम धरा गण्डपत लाला, जे भडा किया
 याकी पर पुडा, दल देभते रहेना किस्ती के आने मति देना
 हाथमें तसुल थामे रहना कहे पारअती ॥ १ ॥ जल जल
 शिव आते अक्षे मन्दिल के तम धाते भुष से गनपत
 ज्या करभाते नहिं दुगा जना रे हरिसमें आये संकर
 मारा गण्ड के सिर यंकर सिर गमा ध-द्रासन में उंकर
 लगी बोध तंउहन ॥ जे जल मन्दिल आते भुष से पूछे
 गौरा आते योकी जेडा था गण्डपत ज्योकर आये पावन
 (उडान) सीन सुनो रानी गौरा, शीन सुवन किस्का था
 भडा, भाद सन्भुष हमसे तो लडा, जवाह जल ना ल
 टा हमने यंकर से सिर कटा वो तो फिरता बोटा बोटा
 धंउधंउ धंउती ॥ २ ॥ तो तुमने ज्या पाया यंकर आलक
 पै यलाया रे रे गौरा ने करमाया संभु से अयन जे
 ज नवदी सिर के लाना मेरे आलक के छलाना तन की
 तपन पुजना नद कर भोजन ॥ जेन अन्न नद भांउ
 अपने आलक के वर्र पांउ उसके सुरत के अल जंउ मेरा
 प्यारा गन (उडान) गन गये शिव सिर दुंढन, फिरत
 हंरनी था कुंजन, काह काट सिर लाये डेरन, काह करतप
 करते धउ पर जम्भाया सिर पूभते उरके दन्तो उपर ज
 उते हीरे लाल भाती ॥ ३ ॥ गाह गौरा महारानी ओ शिव
 संकर अंतर जमी मिल के करते दीनो प्राणी आरत गन
 की । लाम लउका जल जिया पानी गौरा ने नद पिया शिव
 ने परदान दे दिया जेथी हुय मन की ॥ बीम मुकट एल
 जल जलके गण्ड के नेगा यमयम यमके भावा पुढप की

मल्ल अमके न्यारी छभि उनकी (उडान) तु नाम मुन पि
 धन डरे, वा वा मनकी देव करे, हे हाथ जिस जन उपर
 धरे, लाभ अलक्ष लज्ज राप्ते नीची दुश्मन की कर राप्ते
 लडु मोहप्यतका याप्ते मंगल मुरती ॥ ४ ॥ हम ल इंड
 में कहेते शानी अरथा तुनसे पुछते जलदी कर जाना ता
 कीहे छोडे गिकट कथन । धन जेगिन सिर उपर आया हस्ती
 का सिर कट कर रक्या उस हस्ती पे किरका सीन दरो म
 यन (उडान) वडी दिकर तुने लगाध, गुंर रिसालगिरा
 से राह पाध, पीरपक्स आसाराम छन्द मधारी के सरन
 म गाछ गावे दिकर लम गडु कहे अेती ॥ ५ ॥

सःवधी.

सरस्वति जेठ कंठ भेरे । में तो तेरा दास आस यरनोकी
 रभु तेरी ॥ कि पिरथम में सुभरो तुमको । सदा सुरस्व
 ति माता आशारा तेरा हे हमको ॥ अकल पुष तुछी देत
 सभको । जिस पर होती दयाल करती निहाल उस जन को ॥
 भवन में जेठा महरानी । कला तेरी तीन लोक जनी ॥
 सुरस्वती हे गुनकी दानी । दईवन्देां का दुष हरनी ॥ ह
 री दुष दलिदर भेरे ॥ १ ॥ हंसकी असवारी साने । गले
 पुषों की माल छत्र सिर सोनेका राजे ॥ शारदा भवन
 पीय राजे । धटो की धनधोर टिकोरा नौपत का पाने ॥
 जे कोछ दरसन की आवे । की हरे हे निहाल जवे ॥
 जेध मांगे सोध पावे । की मनकी धम्छा भर जवे ॥ जे
 मनमें धरे रहें धीरे ॥ २ ॥ कि छिरहे शान मुझे देना ।
 तुम हो गुनकी दाता माता तनका दुष दुर करना ॥ अरज
 मुज गरीय की सुनना । देव ग्यान उपदेश शारदा हुं मत
 का जाना ॥ करों कुछ जन पर अण दाया । कि परथम में
 तुमकी धाया ॥ सजा में तेरेध गुन गाया । कला तेरी पु

डी महभाया ॥ कि तुमको धावे सँसारे ॥ ४ ॥ कि जे
 नर सुरस्वति के धाता नहीं रहे मत हीन यान वो
 छिरहे में पाता ॥ तुररे वाला इंड में कहेता दुर्ध मुझे
 परसन सरस्वती गुनकी बिधाता ॥ रिसाखागिर मुरसद
 की दाया आन सरस्वती से पाया ॥ दयालयन्द ने यंग
 भडकाया ॥ महारीने छन्द कथ गया । कलगी वासें के मा
 न मारे ॥ में तो तेरा दांस आस यरनों की रभु तेरे ॥४॥

लावणी.

रूप सत्तमकी. देय तपस्या भये प्रसन्न संलु भोला ॥१॥
 भक्त आपनो जनि भगीरथ जटा का इँदा अट भोला ।
 तीन धार भई तीन लोक में चौदह भुवन जको परताप ।
 सुरनर मुनी जन सकल देवता सेस सरीजे करे हो
 जप ॥ दरस परस भंजन के डीन्हे भिटे सभै तन मन
 की ताप । आगम निगम अप्यान करत हे भक्त सनात
 न आपे आप । जल गम्भीर तीर में मारी बीर जत्रि
 नका टोणा ॥ १ ॥ जत कुजत किसान पडा था किया क
 म छन कभी न नेक । बोर होत जप धर से निकला
 लिया नाम गंगाजका अका धाय जैल के भोवन लाग
 लगा सींग गिरा डल के इँक । सुधर गध पापी की काया
 भीटे दुःख सुख भयो अनेक ॥ भयो हर ३५ मल नाग
 पिराजत कर भिभुतका लिखे गोला ॥ २ ॥ काही कलंगी
 अधम अधरमी न्हाय तुरत इल पावे यारा न्हे पिरय
 आसन पर जैठे कर रहे भेटों का डियार ॥ पडु शिव न्हे कैला
 स सिधारे स्वर्प का करे भियार । काँई कृश्र न्हे मुरलि प
 जवे लपि यम दुत भये लायार ॥ उर्ध्व लोक को सकल सि
 धारे पाय पाय निरमल योत्रा ॥ ३ ॥ अदभुत लीला महा

शनीकी वार कर रही निहार । तारां चन्द्र कुच से उज्यव
 हार भये गज मुक्ता हार ॥ हंसनकी पांती सरमाती नि
 नकी जग में अज्यय अहार । चन्द्र आरती सदां उतारे
 अस्तुते करी सप्ती रहे निहार कहे हर यरन देखि यह कड
 टुक सिंहासन यम का डोला भक्त आपनो जनि भगीरथ
 जटा का चून्दा अट जोला ॥ ४ ॥

लावणी

श्री जे जे गंगा धारा । तारनी अलक ते तारा ॥ टेक ॥ कड
 लग कडिअे नस तेरे । ते तारे सन्त धनेरी ॥ जिसके
 तडी काल धेरे । टालते करे नडि हेरे ॥ हे साध सन्त
 का हाता ॥ दरशन से संकट जाता न्हाय ज्ञान अति
 आता । काटती सकल जन्मल धार तेरी आरा ॥ १ ॥
 तेरे आर दिसाके नाके । यल रहे नीर सखिलाले ॥ ज्या
 गानि ज्या कंगाले । तेरेध यरन सिर धाले ॥ तेरी लडा
 रे आनंद करनी । हुःअ हरिद जन्मको हरनी ॥ श्री जे जे
 गंगा जननी । ते तार दिये रेदास जनि जग सारा ॥ रा
 राज धन्व रेन दिन धाते । संकरल ध्यान लगते ॥ हा
 नोये हत थरीते । करना करि करि जते ॥ ते यार अंड
 हे राप्ते । उर धरी नीर के आप्ते ॥ अंटको नर्भया देती जे ।
 जिन धाअे आडे आअे काज सुधारा ॥ उगा कहे रिसाल
 गिर के जेले । श्री गंगालुका प्याले ॥ अधर निराली अ
 ले । अकेसे गाते ह्याले ॥ हंगल के अहर आया आ
 कर यग अउकाया ॥ श्री गंगा रपना दया अनिज
 शानिने तछ आसरा धारा । तारनी अलक ते तारा ॥ टा ॥

લાવણી.

બના બની દસરથને લાલા. સને સિરે સેહરા ખહુંત
 આલા. ટેકા સબા સખ મનમે હુલસાધ. શ્રી સમજ કી-હી
 વ્યતુરાધ ॥ પલક મેં પિનાક ઉઘાઈ. તોડતે બાર નહી
 લાધ ॥ (દોહા) મેહી રતિ રંબા મદન નિરખી છબીલો
 રૂપ. તીન લોક જ્ય જ્ય કરે છકિત બચો સખ ભુપ ॥
 અજબ્ય છબિ સુરત મલખાલા. બના બનો દસરથ કો લા
 લા ॥ ૧ ॥ સજે તન જમા જરી કા જોર. બાલ પર
 લગી કેસરીયા ખોર ॥ બિલોકે સિયા પિયા કી ઓર. ડિરે
 નર મારી મમન અહુ ઓર. (દોહા) મેહંદી લગી સુ
 હાવની કંગના બાંધે હાથ. પીત બસન કદિ સોં કસે લ
 અન બિર લિયે સાથ ॥ પહિરે ગલ મોતિન કો માલા. બના
 બનો દસરથ કો લાલા ॥ ૨ ॥ અવધ સોં બરાત સ
 જ આધ. જનક ને બેદી રચવાઈ ॥ ચોક મોતીન કો પુ
 રવાઈ. જનકી રધુબર સે વ્યાહી (દોહા) દિયે દાન સ
 નમાન કરે પૂજ જન કી આસ. જયક મંગલ ગાવતે મ
 નમે બહી ઉલાસ ॥ હરે તિશુવન કે બ્રમ જલા. બના
 બનો દસરથ કો લાલા ॥ ૩ ॥ બિદા બય રાધવ મહારાજે.
 સકલ મલ ખાજ રથ આજે ॥ દુન્દભી આનંદ કે ખાજે.
 દેખિપુર તિરહુંત છબિ ઘાજે (દોહા) પરસુરામ કે ગર્જ
 કો પલ મેં કી-હો નાસ, સુકિત બકિત પાઈ જહાં હર ચ
 રન ચર્ન કે દાસ ॥ દૂર બચો પલમેં કસલા. બના બ
 નો દસરથ કો લાલા ॥ ૪ ॥

લાવણી.

કથી તો ફેરા કરો હમન ધર ગિરવર ગિરધારી. લયા ઉમાલ મુકે દરસ કબ દેવમે બનવારી ॥ ટેકા વો ઠાકુરે
 જદુનદુન કાંકી દિખાય જ આકે. તલકત જમરા મેરા

तेरे पिनभूम पिछुंटे मिला के ॥ सवन सुनी रस बरी ल
सुरी मन से गया छल के । तज दिया आवन जन मेरे
अह और नत सभ के ॥ यही मेरे ल कोष आली री क
३ नतन क्या री ॥ १ ॥ मेरे हिरदे अस गज छवि वे
पिताम्पर पठ की । प्रेम पगी अंसी सुन मधुपन नित
नठि सटकी ॥ वो नट नागर छेल लंगर के काज हिरं ल
टकी । दही मही कर पुकारती लछ गोरस की मठकी ।
हुंठे बंछे हेरान कही नही मिले मुकट धारीना २ ॥ तन
मन व्याकुल मेरा पिना देखे राधापर को । निस आसर
सपि नींद न आवे री आली हमको ॥ लगत नहिं ल
हमार हो हम अंवर हिरत अन को । पत्र पत्र हुंठली क
दम की डालन में हर को ॥ हुंठे अन अन अहुंत कहुं ना
मिले मुकट धारी ॥ ३ ॥ रिसालगिर उस्ताद अडे हे साग
र माने के । निन अतलाई राई प्याल कथ गांठि कृश
छके ॥ आसाराम औ पीरअकस कहे कलगी वाले सटके
मसहुर हुंठे छन्द रे मुहकोंपर दमाल मझारी के ॥ गावे र
भपरसाद औ देपीदीन इड में भिड के । दोनो गंगु कहे
कि माने शंभु सेव छां के ॥ जोले दौलतराम सदा लुररे
का नकशा हे नरी । लगा उभाहा मुजे दरस कथ देवगे अन
वारी ॥ ४ ॥

सावणी.

आवेगो नन्दलाल आवेगो अंसीको नल सपियां होवेगी
येहाल सारी येअस री । प्रण के कुंजमे असकरन पाजे
गी भेरन असुरी ॥टेका तेजसे आहीर आवत कालिंद्र की ती
र आनंत अंसी हे गंजीर अहरी और लसरी । सापि
त साबिस सनाकरे श्रीपति अंग मानी सस री ॥ ल सु

न पावे तान जवे आवे वाकी जन जयसें अनक य
 डी हे कान कहे ज्ञान हंसरी । छल कसमं शाहह छल
 म की हुंक्रम से गछ गसरी ॥ जेर पुसी से जवे म
 भीयो पुण जपर जतलावे जंसी सुन्नेसे जाण आवो
 गावो जसरी । दयाल दामोदर जने निरदर्थ हर वे यि
 त जय हंसरी ॥ जरा मान ले पात करती नैक जिक
 र दिन रात में ना जनुं जिलत धात क्या दिन हंसरी
 (वृजके) रूप रंग लभ लेत हंसरी हरहि से हेत अण तुं
 तीर न जकर जेत मान आपसरी । जेर जपर हे जेर
 कोकलि जयां से ले कसरी ॥ सरली की जनार सुनती
 सारी वृजकी नार शामा दिल को डाल वार जजे आल
 सरी ॥ म्यापस र श्यामकी शकल में हे जैसा रस
 री । सपर सपुरी जन सुरत साइ साइ पह्यान जं
 सी सुन्ने से कर कान नागन ले डसरी । जर्म जेक
 जहर जयां हो तीतर से पसरी पसरी । तरह तरह से
 आवे ताकत जेर हमे दिखलावे हंसरी कछा कही हो ज
 वे इडके नस नसरी ॥ (वृजके) जलम जुलमी जेर
 जहर आता हे जडी जोर जुलमीं से मोहे मन मोर जो
 र पछी पसरी । जेन अदल से अजय अकल से जल
 अन्दन धसरी ॥ गाहिल करे न जोर करता गरज ह
 गा हर ठोर अवतो ताक रछा कुछ जोर बीजत मसं
 री ॥ कहेर कल की जेक कायुतर के देता टोक जन जती
 लो री रोक कहे सप असरी । कृत्र कन्हैया करे जैसा र
 ग कान्ह हे पारसरी ॥ गिरधारी महाराज गावे गुन
 की रागनी साज हंसरी परमहंस सी आज जने जस त
 सरी (वृजके) लावे हमारे ज्याल दुंढे दिखी भर मे
 याल उदकु को दीजे निकाल जे राकसरी । मन से जी
 सारे छियो अन्द्रमा देप के भावसरी ॥ निकला जना

छर प्याल यह नावक की तीर तु तो यिडा नहक भेपीरा
 तुंजे युढभस री। आर पार मन आह वाह जोयल तक
 कर रही यस यस री॥ हरेवा हर आप हम तो नंपते
 उनक नप गावे' नमुना सिंध की छाप हे पुरकस री ॥
 बार यकी से' कहुं मान भरी हे ठसठस री ॥ दुर्गासिंध
 के छन्द सिंधु सायर हे आनन्द बिनको सुन सुन के हुं
 ये पन्द भागे मुयरस री। वृष क कुंजमे असकरन वा
 नैगी भेरन असुरी ॥

सावणी

असार ध्यान शिव हरिहरक रे, करआसन पाध'परका,
 अगडुप'अ अगडुप'अ डिभाक डिभाक डिं आणे उमर शिव
 शंकरका. ॥ टेक ॥ १

अंग अभुति लजाव दिया शिव, हाथ लीला निशदिन जोणा,
 क्लास होकर बोटे मसाणुमे, ये साहेप शंकर जोला ॥ अ. २ ॥
 जोपरीमे' जोवन करता, गिरिन लये सो अरधांगा,
 सुरनरमुनीवर ध्यानधरे, कोष्ठ देवता हये अदभुना. अ ३ ॥
 त्रिसुलसे त्रिपुरासुर मारयो, तीन नेन दीये अधिकारी;
 नागन डेरा कुंडल पीराने, यडे जेलकी असवारी ॥ अ. ४ ॥
 कुंडी ने कुरका लेकर गौरी, धुंठ पीलावे निशदिन अंभ;
 गजे शंढकी माला पीराने, जटाजुट ओर शिर वहे अंगा. अ. ५ ॥
 जिअसे कंठ हुवा निला. गगन नाम मुअसे' जोल्या;
 ठंडा शीतल लहेर हुवाअप, प्रेम भजनमे' शिव जोल्या. अ. ६ ॥
 जोे झाडी भांगे उनकु देवे, ये साहेप शंकर जोणा,
 आक धतुरो आप आरोगे, दुध कुर कोष्ठकु देता ॥ अ. १ ॥
 शींगी शेखी शिवकुं सोखीये. जोसे भगवा अहु रंग;
 करकुंडी शिर छत्र पिराने, जोहडी हे सुंदर नव रंग ॥ अ. १ ॥

એક રાણી તોરી એરા પારવતી, દુહા રાણી શિવ અરધંગ,
ત્રીજી રાણી અસલ બિલાંદે, જટાગુટ શિર વહેતી ગંગા
અસાર. ॥ ૯ ॥

એક રાણી તોરા ચંદન ધસતી, દુહા જલ ભર લાવેગી ;
ત્રીજી રાણી ધુપ દીપને, ચૈથી જ્ઞેત જલાવેગી. ॥અ.॥૧૦॥
તુકારામ ઉસ્તાના મોહે, સાહેબ કે અધસે બહું રંગ,
દેખ દાખલા પોથી પુરાણમે, મતકર આતા અગડભંગ. ॥
અસાર. ॥ ૧૧ ॥

લાવણી.

જય જય હયે શિવ પરમ પરાક્રમ, ઓંકારે શિવ તમ શરણુ,
શિવ નમામી શંકર ભવામી શંકર તુમ શરણુ ॥ ટેક ॥ ૧ ॥
દશભુજ મંડલ પંચ વદન શિવ. ત્રિનયન શોભિત શિવ સુખકંઠ
જટાગુટ શિવ મુકુટ બિરાળે, શ્રવણે કુંડલ અતિ રમણુ ॥જય
જય ॥ ૨ ॥ લલાટ ચમકત રજની નાયક, પચાંભુપ ગવરીશ,
ત્રિસુલ ચમકત વિદ્યાત શોભા, ડિમ ડિમ બાળે દિન મધુરં ॥
જય જય ॥ ૩ ॥ જય અરમાંબર વ્યાઘ્રાંબર હર, કપાલ મા
લા ગંગેશ, પંચ વદનપર ગણુપતિ શોભા, પૃષ્ઠે ગિરિપતિ
જયાં લેશં ॥ જય જય ॥ ૪ ॥ ભસ્મિ લેપિત સરવાંગે હર, નં
દી વાહન અતિ રમણુ. વામાંગે ગિરિરાજ બિરાળે, ધંટા ન.દ
દીન મધુરં ॥ જય જય ॥ ૫ ॥ સિદ્ધેશ્વર મમરેશ્વર શંકર,
કપિલેશ્વર શિવ ક્રોટેશં, કપિલા સગમ નિરમળ જળ છે. કોટી
તીરથ ભય હરણુ. ॥ જય જય ॥ ૬ ॥ નર્મદા કવેરી સગમ મ
ધ્યે, શાભીત ગિરી શિખરં, ઇદ્રાદિક સુર સેવિત નિશદિન,
રંભા નૃત્યનિ દિન મધુરં ॥ જય જય ॥ ૭ ॥ મંગલ મુર્તી
પ્રલયાકષ્ટપદ, અદ્ભુત શોભા મૃદુ ભુવનં, શુક સનકાદિક પઠને
સ્તોત્રં, મનવાંછીત ફૂલ ભય હરણુ. ॥ જય જય ॥ ૮ ॥ પ્ર

ष्याष्टक पद भाहेश्वर, रययति निर्मल पद संगम. पुष्पकृपा
त्रियुष्मात्म सदाशिव, पतीत पावन भय हरण्युं ॥ नय नय ॥
॥ ६ ॥ शिव नमामी शंकर भवामी शंकर हर हर शंकर तुम
शरण्यु.

श्री शिव स्वरूप दर्शन.

भुभ शिव शिव ओयरेनां. शिव रूप समज दृढ करनां० टेक
गंग तरंग अंग शिर शोभित, भाण पिराजत अंद्र कणा,
कंठ इंदमणी माल व्याल अहु, लस्मभूत भय हरनां. मु. १
स्फटिक स्वेत वत तन कर कांति, नयन कमण त्रय धारी,
जामा वाम अंगे सोढत जून, अद्भुत अकण भियरनां. मु. २
शिव समाधिमे निजपद ध्यावत, सो शिव सय घट ज्याप रक्षा.
द्रश्य त्याग सो शिवपद दिन्न धर, द्विर न चोरासीमे द्विरना. ३
सुछम स्थुल सत्य सय नाहिं, सत्य आतमा आप मडा,
देव कृण्य अनुभव यह गावत, लीमज सत्य समजनां. मु. ४.

श्री राम दर्शन.

अतर का पट जाल रे तोकुं राम मिलेगे अंतर. टेक.
सय घट घट मे राम रमैया, कठिन अयन मत जाल रे. तोकुं. १
रग मेहेलमे जेत जगत डे, आसन से मत डाल रे. तोकुं. २
यद सपी भज जालकृष्ण छय, अनडड आजत डाल रे. तोकुं. ३

श्री प्रेम लक्षणा लक्षित.

काहु भिध मिल जय गिरधारी, काहु भिध मिल जय गिरधारी;
काहु मेसा जतन अतावे, काहु भिध मिल जय गिरधारी, टेक

ગોકુલ દુંડી પિંદ્રાપન દુંડીરે, દુંડ લીન અજ સારી. કાહું. ૧
અમિલ અનમિલ આપ ઓધાર્યો કીજો સાલ હમારી. કાહું ૨

શ્રી અખંડ આનંદ.

અનુંભવી આનંદમાં ગોવિંદ ગાવે રે. (ખેવાર) ટેક.
વેહેતા જલનાં વેગમાં, પ્રતિબિંબ ન ભાસે રે.
જહાં લગીજન ડગમગે, નહીં અલ્પ પ્રકાશે રે. અનુંભવી ૧
કેસરી કેરી ગંધથી કરી, ક્રોટિક ત્રાસે રે,
આતમનાં ઉદય થકી, અજ્ઞાન નાસે રે. અનુંભવી. ૨
મરિ જીવ્યાનો મરગ તે જન, કોષક જાણે રે ;
મુકુંદદાસ અનુંભવી મહા સુખને માણે રે. અનુંભવી. ૩

શ્રી કૃષ્ણ ભક્તિ

જગીએ અજરાજ કુંવર નંદકે દુલારે.
નંદ કે દુલારે માત યશોદા કે પ્યારે.
જગીએ અજરાજ કુંવર નંદ કે દુલારે. ટેક.
સુરજ ઉગો પ્રાત ભયો, છિપ ગયે સખ તારે,
ચંદ્ર કળા હીન ભાષ સુરજ કે અજવારે. જગીએ. ૧
મથુરાંમે જન્મ જિયો ગોકુલ સધારે,
કંસકોં નિરવંસ કીઓ. પુતના પહારે. જગીએ. ૨
અજપર જખ ઈંદ્ર કોપ, શુવાલ ખાલ હારે,
મજુજ પતિત પાવન, અપિયલ અદ પારે. જગીએ. ૩
જમુનામે ગેંદ પડી, શુવાલ ખાલ હારે,
કાલીનાગ નાથો તારો, કૃષ્ણ ભયે કારે. જગીએ. ૪
અસુરનકો નાસ કીઓ, દેવતા સુધારે,
સુર શ્યામ શરણુ સાર, દીજીઓ હમારે જગીએ. ૫

શ્રી રામ ભક્તિ.

જગીએં રમુનાથ કુંવર પંછી વન ખોલે,
 પંછી વન ખોલે લાલ. ચિડીઆ વન ખોલે. જગીએ. ૧
 પ્રાત ભારું પ્રગટ ભયો, રત્નકોતિમિર મયો,
 ભમર કરત કુંજગાન. કમલ ફલ પ્રફુલે. જગીએ. ૨
 અંદ કીરણ શીતલ ભષ, ચકલી પીઆકુ મિલન મધ,
 અતિ સુગંધ અતિ સુગંધ પવન મંદ દોલે. જગી ૨
 તુલશીદાસ અતિ આનંદ નિરખત મુખારપિંદ,
 દીનકું પ્રભુ દેત દાન, આનંદ અમોલે. જગીએ. ૩



શ્રી જગનાથજીની જાખી

આજની ધડીરે ધન, આજની ધડી;
 અમે નિરખ્યા જગનાથ, ધન આજની ધડી. ૧
 વર્ણ અઠારે એકદા જમે, રૂડી રીતડી;
 એક ખીજના મુખમાં આલે પુરણ પ્રીતડી. આજ. ૧
 જગનો જીવન જોઈને જોયું, ભરી આંખડી,
 મુખકું દીઠે પાતક નાસે, છાતડી ઠરી. આજ. ૨
 રાત દિવસ હૃદયમાં રાખું, મેલું નહીં ધડી;
 દાસ વેરાનાસ્વામીની સાથે, જીવની જડી. ૩



ગરખી

વહાલો મારો કુંજમાં વાય છે વાંસલી રે લોલ,
 નાદે વીધી છે મારી પાંસળી રે લોલ. ૧
 હુંનો સુણતાં બુલી સહુ યાતુરી રે લોલ,
 મળવા થઈછું અતિ આતુરી રે લોલ. ૨
 તપાવેલી લાગી છે મારાં તનમાં રે લોલ,

ગોઠતું નથી કંઈ ભુવનમાં રે લોલ. ૩

માહારં ચિત્ત ચોહોટે નહીં ધરમાં રે લોલ;

પેહું છે મન ધનશ્યામમાં રે લોલ. ૪

સખી હાવાં તો મળી સુખ મહાલીયે રે લોલ,

મહીકું વેચ્યાને મને ચાલિયે રે લોલ. ૫

સખી મુને મોહન ભાગે છે ધણી મીઠડો રે લોલ,

અવર એહવો તો નથી દાઠડો રે લોલ. ૬

ધન દહાડો તે અવતારમાં રે લોલ.

રમીયે શ્રી નંદકુમારમાં રે લોલ. ૭

વહાલો મળતાં સહુ સુખ આપશે રે લોલ,

સેહેજે સંતાપ સહુ કાપશે રે લોલ. ૮

સામજો સાગર ઉલ્હાસનો રે લોલ,

પ્રાણુ જીવન દાસનો રે લોલ. ૯

ગરબો

ગરબે રમવાને ગોરી નીસરયારે લોલ,

રાધિકા રંગીલી અભિરામ વ્રજવાસણી રે લોલ

તાળી દેતા વાગે જાંજર જુમખારે લોલ. રાધિકા રંગિલી ર

સંગમાં સાહેલી ખીજ છે ધણી રે લોલ,

કાંઈક ઠહું તેનાં નામ વ્રીજવાસણી રે લોલ;

તાળી દેતાં વાગે જાંજર જુમખારે લોલ;

ગિડગિડ તામ છુમ છુમ છુમકે વાજે ધુધરારે લોલ તાળી ર

ચંદ્ર ભાગાને ચંદ્રાવળીરે લોલ,

ચંપકલતા ચારે રૂપ વ્રીજ. તાળી. ગિડગિડ:

લલિતા વિશાખા વ્રીજ મગાળા રે લોલ,

માધવીને માલતી અનુપ વ્રીજ. તાળા. ગિડગિડ: ૩

મનમથમુદા ને મન આતુરી લોલ

હંસા હરસા ને હીરા નામ વ્રીજ. તાળી. ગિડગિડ;

Handwritten signature

कतकी प्रगल्भा प्रेम मन्त्री रे बोल,
ऐ आदे सभी सुप्रधाम विन्. ताणी जिडगिड. ४
विधविध वाञ्छत्र वाञ्छे छंदमां रे बोल,
ताल स्वरे मणी करे गान प्रीण. ताणी जिडगिड;
बोल डेहेतां ते अक्षर अक्षु ओपता रे बोल,
लटके नमी भेणवे सङ्ग भा प्रीण ताणी जिडगिड ५
पेल रञ्चो ते वृंदावनभारे बोल,
पसीपट ओकरस ३५ विन् ताणी जिडगिड;
गरभो जेवाने गिरधर आवियारे बोल
भोला निरभी श्यामानुं स्व३५ प्रीण. ताणी. जिडगिड ६
श्याम भोला तेम शामनी रे बोल
वाप्यो भेहु अंगमां अंग प्रीण ताणी जिडगिड;
ललिता लछ भेणव्यांनी कुणभारे बोल,
रस भरयां रमाडां रति रंग प्रीण. ताणी जिडगिड ७
आनंद सामर तांहां जिछेय्येरे बोल,
भगन थयां लाडलीने लाल विन्. ताणी. जिडगिड
परम पवित्र ऐ यरित्रनेरे बोल,
दास ह्यो गाछ थयो निहाल विन्. ताणी जिडगिड. ८

गरभी

रातलडी, डोहोनी सगे जग्या,
धाम्मेलछोञ्च नेन्याणु डेर्छनां वाग्यां. रातलडी. टेक
वांकलडुं तम समुं कथ्ये जेयुं,
भोहनछो कर्छ भोहिनीचे मन भोळुं;
उछ प्राणु प्यारी करी यित भोयुं. रात. १
भला भगवत वयनना साया,
डोहोनी काञ्जे डेवी वधाता वाया;
तुरतना तुरत देप्पाया काया रात. २

જુહાસું તંત ન કરવો ઝાળો,	
મોલ ઝોલી રાકતા નથી કાંઈ સાળો,	
જુહા સમ ખાતાં લમાર ન લાળો. રાત૦	૩
હારનાં ચિન્હ દે છે ઉર દેખા,	
અધર પર દીસે છે અંજન રેખા,	
મળી મળી અય છે નેત્રની મેખા. રાત૦	૪
જે સું રમ્યા રજની લાગી તે અમોલી,	
જુલે તિનું નામ જ્યા એ છે ઝોલી,	
તેનાં સમ તમને કહો દિવ ઝોલી. રાત૦	૫
અખીત છે આવો લમારેક પોહોડો,	
પલોડું પાએ મટે અમ ઘોડો,	
આંગણલે ઉભા આગસ શીદ મોડો. રાત૦	૬
રાખ્યું મુખ પ્રસન હૃદયમાં દાખી.	
જશે ખસી વસ્તું અમુલિક લાખી.	
સમજણી સ્યામા લીધું કામ સમ્પી. રાત૦	૭
સામા સાખી નેન નેહનાં મળીયાં,	
છુટયું માન સુંખ સિંધુમાં જળિયાં	
દયાના પ્રીતમ ખેહું પલંગે દળીયાં. રાત૦	૮

ગરબી.

હું શુ જાણું જે વાલે મુજમાં શું દીઠું,
 વારે વારે સામુ ખાળે મુખ લાગે મીઠું હું શુ જાણું જે.
 હું જાઉં જળ ખરવા ત્યાં પુઠે આવે,
 વમર ખોલાબે વહાલો પહેલકુ ચલાવે. હું શુ જાણું જે
 વહુ ને તરછોડુ તોયે રીસ ન લાવે,
 કાંઈ કાંઈ મીઠે મારે ઘેર આત્રી ખોલાવે. હું શુ જાણું જે

દુર થકી દેખી વહલો મુને દોડ્યો આરી દોટે,
 પોતાની માળા કાડી પેરાવે મારી કોટે. હું શુ જાણું ને
 મુને એકલડી દેખી સાં મારે પાલવે લાગે.
 રંક થઇ કાંઇ કાંઇ મારી પાસે માંગે. હું શુ જાણું ને
 મુને જ્યાં જ્યાં જાતી જાણે ત્યાં એ આવી દુકે,
 બેની દયાને પ્રીતમ મ્હારી કેડ નવ મુકે, હું શુ જાણું ને

ગરબી.

રૂપાળા શ્રી રણુછોડછ, રાજ, રૂપાળા શ્રી રણુછોડ છે ટેક
 રાત્ર દિવસ મન ભમે છે રસિયામાં,
 નીરખવાના ઘણા કોડ છેજ, રાજ રૂપાળા. ૧
 શ્રી શકરપણુ શિવજનુ સર્વસ,
 ઉપનીષદોની ચોડ છેજ, રાજ રૂપાળા ૨
 ઉપમા દેવા નથી કોઇ ખીજ્જું,
 એ અલબેલો અન્નેડ છેજ, રાજ રૂપાળા. ૩
 એહને મુકીને ખીજાને ઉમળે ને,
 તેમાં મેરૂ જેવડી ખોડ છેજ, રાજ રૂપાળા. ૪
 ડાકોરના ઠાકોર નથી વાહલા તે,
 સ્વાન વ્રપભતો જોડ છેજ. રાજ રૂપાળા. ૫
 પ્રગટ સુરજ છે સંસારમાં દયા પ્રણુ,
 દેખેનાં ઓળખે તે ઘોડછેજ. રાજ રૂપાળા. ૬

પદ રાગ ગરબી.

લટકાળા નંદજના લાલ હો, કાના કામણુગારાહો,
 મોહન મોરલી વાળા હો, માવા બહું મરમાળા હો, ટેક
 ગોપી જનને ઘેરી કરવા. વગાડો વિહલ વેણુ
 કામનીઓના કાળજ હરવા, કાના એ તારાં કેહેણુ લટકાળાજ

રાસ મંડળની રચનક રમવા, વૃજ વનિતાની સાથ.
 ખટ મહિનાની રજની કીધી, નક્કી તે નટવરનાથ. લટકાળા. ૨
 બેલડીએ બાળા વળગાડી, નાચ્યા નંદના લાલ,
 યન યન થેઘ થેઘકાર કરી બહું વાહાલા તે જણુચ્યો બહાલ. ૩
 સોળ વરસની સુંદરીઓ સૌ, શોભે શશી સમાન,
 એવા અનેક આ શશી સ્વરૂપમાં, યળકી રહ્યા ભગવાન. લ ૪
 અનેક વૃજ વનિતાએ થઇને, દરથો નંદકીશોર.
 બેલડીએ બાંઝી સહું બાળા, બોલે બોલ કઠોર. લટકાળા ૫
 શાંત થઇ સુંદર વર સૌના, સુણુતા સ્નેહે વેણુ.
 જયસંગના સ્વામીશુ તેથી, નારી સૌ નયવે નેણુ લટ. ૬

પદ રાગ ગરબી.

ચાલોને અલબેલી સખીઓ, કૃષ્ણ તણી પુઠે જઇએ,
 વિકૃત્તવર વિણુનું વૃજ વરણ, વિકૃત્તવર સાથે વશીએ. ચાલો
 છોગાળે છેતરી છેહ દીધી, અણુધાર્યો ઉડી ચાલ્યો,
 નિશ્ચય નાથ નકટ થઈ નાઠો, તે ક્યમ આવે ઝટ ઝાલ્યો. ચા. ૨
 સ્નેહ લગાડી સામળીઓ શા માટે પરદેશ પરવરીચો,
 પરવરીચો તો ભક્ષે પરવરીચો, પણ શા સાર ઠગ ઠરીચો. ચા ૩
 બાળાપણુ મદ માનો ફરતો, માખણુ મહી ચોરી ખાનો,
 પ્રીતમ એમ પજવતો સાને, તે કેમ આજ રીસાઇ જાનો. ચા. ૪
 ગોકુળની ગોવાલણી વિષ્ણુ એ, કોહો કોના ગોરસ ખાશે,
 વાહાલા વિણુ વૃજવનિતા વયમાં, વાંસલડી કોહો કોણુ વાશે ચા ૫
 સાચી પ્રીત અમારી સમજી સામળીઆ આ અરણુ લ્યો.
 જયસંગના સ્વામી શરણુગત દિન દાસીને દરશન દ્યો. ચા. ૬

પદ રાગ ગરબી.

દેખ અલી ઓ રાધે તારો, નટવરનાથ રીસાઈ ચાલ્યો,
 કેહે કડવાં શાં કેહેણુ તે કીધાં, કે આ ઝગડો ધર ધાલ્યો. દે. ૧

भावतुं भोजन नव कीधुं? के नव कीधु कांछ कहुं ?
 शी रसीयाने रांठ पडी ते, रंग मही आ भंग थयुं. दृष. २
 प्रेम करी ते पान पटीशु, पातणीआने कर न धरी;
 केतेकारणु सामणीआ आ वहाल तणु विपरीत करी दृष अ. ३
 रंग राग रंगरसीया साथे, रंग भेर राधे न रमी शकी;
 नयसंगनो स्वामी सामणीआ, तेथी प्रण वर्ज्याण नकी. दे. ४

पह राग गरभी

ना ना सप्पी नकी भे नटवर नाथने नव केहेणु कहुं;
 काण तणु क मथी निश्चय आ, थवा काण ते सेहेण थयुं. १
 स्नेह करी सामणीआ मारी, साथे वादविवाद करी;
 सयन करी सय्यापर पोढी पाछली रात्रे कुय करी २
 रमतां नमतां रंगरसियो नित्य, द्वारामतीने याद करी;
 निसासो नांप्पीने रडतो निश्चय नेनमां नीर भरी ३
 कोष गोपीआ कांछ कहुं नथी. केहेतो सप्पी सोगन आड;
 नयसंगना स्वामी विलु हुं अही, अवनीमां अहुं अकणाडि. ४

पह राग गरभी

प्रण वनिता आवुं न वदशोरे, वांकु अमाइं ॥ टेक ॥
 प्रण वनिता आवुं न वदशो, झेकट दुल्यां नव इरशो,
 शाशा सधजे नव इरशोरे, वांकुं अमाइं. प्रण वनिता. १
 कोहो काणंदरिने कांठे, गोपीआ कोधने गांठे;
 अेक अंकुशं हुं तम माथे रे. वांकु अमाइं. प्रण वनिता. २
 भारेअम थध केम लुल्या, थीर काहाडी नणमां जुल्या;
 अेम केम डाहापणुमां दुल्यां रे वांकु अमाइं. प्रण वनिता. ३
 मुकी मानव भरज्जदा, सौ हेव गांधरव दादा,
 गणुया नव कोष अेकादा रे, वांकु अमाइं प्रण वनिता. ४

શુ શરદ રતુની રાતે, મેં તેડયાં હતાં મધ્યરાતે ?
 રહી રાત્રિ ગયાં પરભાતે, વાંકુ અમારૂં. વૃજ વનિતાં. ૫
 મુજને એકીસો ભાળી, સહ સખીઓ દેધને તાળી,
 ઘેરી દ્યો કુધટ વાળીરે, વાંકુ અમારૂં. વૃજ વનિતા ૬
 જળ જમનાંથી જળ લાવી, મુજને હેતે ખોલાવી,
 ખેહેડુલાં દ્યો ઉતરાવીરે. વાંકુ અમારૂં. વૃજ વનિતા, ૭
 મને તેડી માઅણુ ખાંતે, સહ સખીઓ છાંતે માંતે,
 વીતડો તે કાષ્ટ જાણે રે, વાંકુ અમારૂં. વૃજ વનિતા. ૮
 માટે મરજદે રહેશો, જમસંજ કાઢને નવ કહેશો.
 સમજને સધળુ સેહેશોરે, વાંકુ અમારૂં. વૃજ વનિતા. ૯

૫૬ રાગ ગરખી.

આધા રોહોને અલખેલડા,
 અહીયાંથી તમે આધા રોને અલખેલડા. ટેક.
 સેસો વાળીને ગાય દોવા હું ખેડી,
 હારે અવગાની પશુ હેઠ પેઠી. અહીયાંથી. ૧
 શ્યામ શરીર તારૂં જોઈ નંદલાલા,
 હારે આતો ગાથ બરે ક્ષાળા. અહીયાંથી ૦ ૨
 મોર મુગટ તારો શીર પેચ દેખી,
 હારે ગાય ખીએ વગડાનુ પશુ પેખી અહીયાંથી ૦ ૩
 જુઓ જુઓ કાનજી ગાય આ નાઠી,
 હારે આવી શી નટવર લાઠી. અહીયાંથી ૦ ૪
 ધરનો પતિ મારો ઘેર નથી તેથી,
 હારે વદુ છુ આટલુ મરજદથી. અહીયાંથી ૦ ૫
 પાડોશણુ મારી પુરી વેરણુ છે,
 હારે જાણુશી તો અતિ આવરણુ છે. અહીયાંથી ૦ ૬

જ્યસ ગનો સ્વામી સુણી આ તુઠીયો
હારે હરી તાગો દષ હઠીયો,

અહીંયાંથી૦ ૭

પદ રાગ ગરબી.

મોર મુગટ ધારી, બેહેની પેલો મોર મુગટ ધારી,
વાહલો મને લાગે એ મોરારી, બેહેની પેલો મોર મુગટ ધારી. ટેક.
વૃંદાવનમાં વાંસળી વાયે, હૈકુ હારો જાએ. એની પેલો૦ ૧
આવું પીવુ મને ગમે નહી કાંઈ. ગમે નહી ધર માંહી. એની૦ ૨
મહી વેચવા મથુરાં જતી જાણી ઘાટ રોકે દાણી. એની પેલો૦ ૩
નંદ કીશોરને નજરે હું નીરખી, હૈયામાં જાઉ હરખી. એની૦ ૪
નંદ કીશોરને ઉભા રાખી અહી, જાવું ગમે મને નહી એની૦ ૫
માથેથી મટુકી મહીડાંની ઉતારી, આરોગાવું ગીરધારી. એની૦ ૬
મહીડાં આરોગીને મોહન મારી, મુખકુ ધુંએ ભરો જારી. એની૦ ૭
પ્રીતમની પ્રિતમાં હું પછી લપટાવું મહી વેચવા ભુલી જાઉં. એ. ૮
સાંજ પડે રવી આથમે જ્યારે, ઘેર આવું હું ત્યારે એની ૯
જ્યસ ગનો સ્વામી રંગ રશીયો, પુદ છોડી નવ ખશીયો. એ. ૧૦

પદ રાગ ગરબી.

પ્યારા મુજ ઘેર આવોરે, પ્યારી પર પ્રીત કરી,
પનઘટ પર આ બેદુ રે ઉતાવળી આવું ભરી, ૧
ખાણુ નહી ફરાયેરે, અહીંઆથી આજ હવે,
સરખી સઉ સાહેલીરે, બાળે મને મેણાં દવે. ૨
માટે જઈ ઉભા રોહોનેરે, આંગણલામાં આજ તમે,
મુજ પાડોસી કેરાંરે છોકરડાં તો ત્યાંજ રમે. ૩
તમે તેને હુલાવીરે, પુત્રાવી ત્યાં ફરતા ફરો,
કાંઈ પુછે તો કહેજેરે રખે કાંઈ રાશ ધરો. ૪
હું તો આહી આવ્યો છુ રે, રોતાં સુણી બાજ બહું.

- છાનાં છપનાં મેં રાખ્યાંરે, ઝાઝું શુંજ કહું ૫
 એટલામાં હું આવીશરે દોડી દોડી દાર બણી.
 ચિત ચિંતા ન કરશો રે, મોડું થાય તેહ તણી. ૬
 લોહચુંબક ખેંચેરે, લોહાને પ્રીત કરી,
 તેમ મનડું આ મારે ખેંચાય છે મોહ ધરી ૭
 માટે કોહો કેમ ભુલું રે, વેળાની વાતલડી.
 નવ દેખુંતો તમનેરે, છાની બળે છતડલો. ૮
 ધ્યારા પૃથ્વીમાં બહુ છે રે, પ્રેમી પુરુષોજ વળી,
 પણ તમ સાથે મારીરે મેળાપની ગાંઠ, વળી. ૯
 વળી તે વળી બણારે, છોડતાં તો છુટે નહીં
 ખેડી સજ્જડ સારીરે કહું કહું શું હુજ કથી. કહી ૧૦
 નાંખે નીરનું જો નાનુંરે, માહલડું કોષ પયની મહી.
 તો તે કદીએ ન જલેરે, એવી ગતી મારી અહીં. ૧૧
 દેખું દુનિઆમા દાહાડીરે, મરદ સહું મેરી રૂપે,
 એક મરદમાં મારીરે, નજર તમમાંહી ખુપે. ૧૨
 યાકી સહ વેસધારીરે, મારે મન દીસે ખસ,
 માટે જયસંગ સહનેરે, દ્રષ્ટિથી મેં કીધા પર. ૧૩



પ્રથમ દર્શન ગરબી

- મોહન તારી મોરલીને તું વાર રે, મોહન તારી મોરલીને તું વાર.
 નહીતો વિપરીત વાત થનારે, મોહન તારી મોરલીને તું વાર.ટેક.
 એરે મોરલીએ મારાં મન હરી લીધાં રે;
 મોખીને ઘેલાં કીધાં રે; મોહન તારી મોરલીને તું વાર. ૧
 મોરલીનો સાદ સુણી મળાવને માટે રે,
 ખેડાં મુખીને આવી ધાટરે; મોહન તારી મોરલીને તું વાર. ૨
 સાસુરે સસરા મારાં જોઈ જોઈણીરે,
 વાત આતો સરવે જાણીરે, મોહન તારી મોરલીને તું વાર. ૩

Handwritten signature or mark.

जेशंगना स्वाभी तमे सभजवो शाने रे.
तोपणु मनकुं नद मानेरे मोहन तारी भोरलीने तुं वार. ४



५६

शंकर स्तुति

कगनवा भोरा करसे सरक गयो रे. अ—राग
सजन अहु शेवो, शिव भोगा नाथरे; पातीक दुर जवे. संपत
सुभ थावे ॥ सजन. ॥१॥ १ ॥ कैलासनीवासीरे, भक्ति
तोरी भासीरे; करे जे नर नार पामे ते भव पार, अरो
तुं तारनार, नमु जेडी हाथरे ॥ सजन. ॥ २ ॥ जय त्रिपुरा-
री रे, जगत आधारि रे. लीला छे प्रभु तारी, मंद भति
छे मारी, कहु छु तारी वारी, करो माइ पाप रे ॥ सजन ॥३॥
भदादेव भडिभारे, वरणुव करतारे; पार न पामे कोरि,
वीयार करी जेछ पूरणु कीधो अहप स्वल्प अरे भातरे ।
सजन ॥ ४ ॥ जय जगतारणु रे, अधम उधारणु रे,
जन्म भरणु जय, अविचल पद थाय, जेने तुं सहाय था
गाय गोकुणदास रे ॥ सजन ॥ ५ ॥



५६

संगत संतनकी करले, जनमका सारथक कछु कर ले-टेक
वित्तम देही नर पाया प्राणी-छसका हीन कछु कर ले,
सदगुणु शरणु जके आया जनम भरणु दुर कर ले-संगत. १
कहांसे आवे कहांकु जवे-अे कछु मालुम कर ले,
दो दीनकी अुदगानी यारो-हुशीयार होकर यल ले-संगत २
कान कीसीके जेइ लउके-कान कीसीके साले,
जदलग पलेमे पछसा भाइ-तदलग मीडा जोले-संगत ३

કહેત કપીરા સુન બાઇ સાધુ-બાર બાર નહી આના;
અપના હીત કધુ કર લે બધયા-આબર એકલા જના-સં. ૪

પદ

સંગત મત કરના ખોટી, દુનીઆ ઉલટી હમ્મે જુઠી-ટુક.
સગા બાઇ સો ખુરા ખોલે-સાલેકું સનમાના,
માઈ બાપતો બીખ માગે-સસરેકું જમખાના-સંગત. ૧
જીસકા લેવે ઉસ ધમકાવે-આત ખોલે તીનિ;
સાધુ સંતકુ કધુ ન માને-રખે કાનપર પધરી-સંગત ૨
કઉરી કઉરી માયા જોરી-લાખ કરોરા મોટા;
ચીઠી આઇ જોદ રામજીકી-ખોલ ગયા લંગોટા-સંગત. ૩
કહેત કપીરા સુન બાઇ સાધુ દુનીઆં બધ દીવાની;
મહાદેવકુ છોડી દીયા ઓર પુજવા જાય બવાની-સંગત. ૪

પદ

ખેલ સખ પેસેકા, સખ કુછ ખાતાં હે પેસા-ટેક.
પેસા જોર પેસા લરકા-પેસા બાબા બહેનાં;
પેસા હાતી ઘોડે પલાના-પેસા લગે નીશાનાં-ખેલ. ૧
પેસા દેવ, પેસા ધરમ-પેસા સખ કુછ બાઈ;
પેસા રાજ રાજ કરાવે-પેસા કરે લઠાઇ-ખેલ. ૨
પેસા હાતીપે અબુજ ચડાવે-પેસા ઘોડે ઉરાવે;
એક દીન પેસા બદલ ગયા તો-પાઉમેં લગર પરાવે-ખેલ ૩
પેસા ગુર પેસા ચેલા-પેસા બકતી કરાવે;
કહેત કપીરા સુન બાઇ સાધુ-પેસા જીવ છોરાવે. ખેલ ૪

પદ

સખ પસેકા બાઇ, દીલકા સાથી નહી કોઇ-ટેક
ખાને પીનેકું પેસા હોય તો-જોર બંદગી કરે;
એક દીન ખાના નહી મીલે તો-શીરકે જવાબ કરે. સખ ૧
જબલગ અપને પત્રોમે પધસા-તખ લોક સલામ કરે;

અપના પઈસા નીકલ ગયા નો-કોઈ નહી મીઠા ખોલે-સખ ૨
 બાઈ અંધ ઓર બહેન સાલે-સખ પેસેકા બાઈ;
 દાલકા સાથી કોઈ નહી રે-કહેત કપ્પીર સુનાઈ-સખ. ૩

૫૬

ક્યાં ગયોરે પેલો મોરલીવાલો, અમારાં ધુધટ ખોલીરે.
 ક્યાં ગયોરે પેલો વાંસળીવાળો, અમને રંજમાં રોળીરે ટેક.
 હમણાં વેણો ગુથી હતી પેરી કસુંબલ ચોળીરે,
 માન જશોદા રાખ પુરે છે, કેસર છાટયાં ગોળીરે. ક્યાં ગયોરે
 જળ જમુનાં બરવા ગયાં તાં, જેડુ નાખ્યુ ઢોળીરે,
 પાતળિયો પરપંચે બરીયો, અમે તે અખળા બોળીરે ૨
 પ્રેમતણી પ્રેમદાને અંતર, ગેખનિ મારી ગોળીરે,
 મીરાંબાઈ કહે પ્રભુ ગિરિધર નાગર, ચરણ કમલ ચિત ચોળીરે ૩

૫૬.

હારે કોઈ માધવ હ્યો માધવ હ્યો, વેચતી વૃજ નારીરે હારે,
 માધવને મટુડીમાં ધાલી, ગોપી લટકે લટકે ચાલીરે. હારે.
 હારે ગોપિ ઘેલી શું ખોલતી જ્ય, કાન મટુડીમાં ન સમાયરે,
 નવ માનો તો જીવે ઉતારી, માંહી જીવે તો કુંજખિહારી, હારે.
 વૃંદાવનમાં જનતા ધારી, વાલો ગૌ ચારે છે મિરધારીરે, હારે
 ગોપ ચાલી વૃંદાવન વાટે, સૌ વૃજની ગોપિયો હાથેરે. હારે
 મીરાં કહે પ્રભુ ગિરિધર નામર, જેનાં ચરણ કમળ સુખ સાગ
 રરે. હારે

૫૬

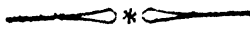
ચીત લાગ્યું મહાવિર તોરે ચરણનસે એ—રાગ
 ધ્યાન લાગ્યું મહાદેવ તોરે ચરણનસે; ચરણનસે હર ચરણનસે ॥
 ધ્યાન ૧૥ સોમવારકુ સેવક આવી સેવા કરત પ્રભુ તનમનસે

ध्यान २॥ मनमोहन तोरे दरशन करनसे पाप छुटत सभ तन म
नसे ध्यान ॥३॥ अक धडी प्रभु तोअ जपेतो; उरे क्युं शीर जम
कीकरसे ॥ ध्यान ॥ ४ ॥ शुक्र सनकादिक जपत अहोनिश;
छच्छा करंत अज तरननसे ॥ ध्यान ॥ ५ ॥ गोकुलदास उर
आस तुमारी; राभो प्रभु मोहे यरखुनसे ॥ ध्यान ॥ ६ ॥

पद

अज अजन गुन गाडिगी, रभते रामकुं रीजडिगी—अज
अजन ॥ टेक ॥ अन अन जडि पतर नही तोइ—ना मे
डाल सताडिगी डाल डाल पीय सहीज—युरी
युरी सीस नभाडिगी—रभते. १॥

जडी न राभुं पुटी न राभुं—नामे अर्ध कलाडिगी,
सदगुर अर्ध भीसे अवीनासी—उनसे हात वेभाडिगी—२॥
करशन कटारा करशन के—आंधु नेनके आन यलाडिगी.
पांय मोहोर पथीस असकर—मुजसे मुजरे आजिगी—रम० ३
पांय मुपी गंगा जल लेकर—मान गुमान आहुंगी,
सभ साधनके रतन भीला के—भाये साथ यदाडिगी रम, ४
तीरथ जडि मे जलमे नाहुं—ना मे अज सताडिगी,
कहे कपीर सुन भाछ साधु—मनही तीलक लगाडिगी— ५



पद-राग-सामथ्री

लोयन मननोरे अगडो लोयन मननो,
नसिया ते जननोरे. के अगडो लोयन मननो. टेक.
प्रीत प्रथम डोले करी नंद कुकरनी साथ,
मन कहे लोयन ते करी, लोयन कहे तारे हाथ. अगडो १
नटवर निरप्या नेन ते, सुभ आग्युं तुंज भाग;

પછિ બંધાવ્યું મુજને લગત લગાડી આગ. ઝગડો લોચન ૨
 સુણ્ય ચક્ષુ હું પાંગુણું, તું માહરં વાહન;
 નિગમ અગમ કહિ સાંભળ્યું દીક્ષવના ગયું મન. ઝગડો ૩
 બધું કરાવ્યું મેં તને સુદર વર સંજોગ,
 મને તજી તુ નીત મજે, હું રહું દુઃખ વિયોગ ઝગડો ૪
 ધનમાં વહાલાજીકને, હુંય વસુ ધું નેણુ;
 પણ તુંને નવ મેળવે, હું નવ ભોગવું ચેત. ઝગડો. ૫
 ઘટેન નથી મન ક્યમ તને ભેટે શ્યાંમ શરીર;
 દુઃખ માહારે જાણે જગત, રાત્ર દિવસ વહે નીર ઝગડો. ૬
 મન કહે ધીક-હઠે, ધુમ્ર પ્રનટ લ્યાં હોય,
 તે તુજને લાગેરે નેન. નેહ થકી તું રોય. ઝગડો ૭
 એ એહું આબ્યાં યુદ્ધિ કને, તેણે સુકાલ્યો ન્યાય,
 મન લોચનનો પ્રાણુ તું, લોચન, તું મન કાય ઝગડો ૮
 સુખથી સુખ દુઃખ દુઃખથી, મન લોચન એ રીત,
 દયા પ્રીતમ શ્રી કૃષ્ણુ શુ. એહું વડેથી પ્રીત. ઝગડો ૯



રાગ (મુજે છોડ ચલા બનજારા)

જય જય જય જગદાધારા; શિવશંકર ભોળા પ્યારા. જય. ॥ ૧ ॥
 મુજ ચરણે નમાવું શીશ, જય જય ગીરજાપતી ઈશ જી;
 ધર ધ્યાન તમાઈ વહાલા શિવશંકર ભોળા પ્યારા. જય. ॥ ૨ ॥
 બમ બમ બમ બમ બમ બમ ભોળા, ધરો હાથ ભસ્મના ગોળાજી;
 ભક્તોનાં દુઃખ હરનારા, શિવશંકર ભોળા પ્યારા. જય. ॥ ૩ ॥
 શોભે ગણે ઈન્દ્રની માત્રા, શિરે વહે ગંગાની ધારા જી;
 બાબુલનાથ ટેકરીવાલા, શિવશંકર ભોળા પ્યારા. જય ॥ ૪ ॥
 સ્વામી શભો સુખ સુખ કારી, ચીત ધરો વિનતી મારીજી;
 ભક્તોને સહાય કરનારા, શિવશંકર ભોળા પ્યારા જય. ॥ ૪ ॥
 અરપુ ભાંગ ધતુરો ભાવે, જન્મ મરણથી મુકાવે જી,

थरुं दास पुणुं यरुणु तादरा, शिवशंकर भोगा प्यारा. नय. ६।
 अदभुत लीला प्रभु तारी. सुत प्रेतनी टोणी भारी ७;
 हर हर दुःख हरनारा, शिवशंकर भोगा प्यारा. नय, ७।
 भोपरीमे भोगन करतां, नीशदीन लहुरमां करतां ७;
 त्रीसुणसे त्रीपुरकु मारा, शिवशंकर भोगा प्यारा. नय ॥ ८ ॥
 नय नय नय शिव ओंकारा मन वांछीत कृण हेनारा ७,
 गावे गोकुणदास गुणु तारा, शिवशंकर भोगा प्यारा. नय ८।

होरी

डैसी होरी दिभाडिं आण कहुं मोहन पाडिं । टेक । हार गछ
 तुम सख वृणयात्रा में नंदलास हराडिं । हेभा री मेरो भेल
 भिलाउन डैसी भेल भिलाडिं । भिलाउन नाम धराडि ॥ आ.
 छीन लेडि वाकी आंकी मुरलिया आंके मुकट हराडि । आं-
 के की सुध के नाके में काटु ता आंकी कलाडि । आंके भिलारी
 अनाडि ॥ आ० ॥ अंजन से द्रग अंजन आंजनि रंजन
 नाम भिटाडिं । नाक थीय नकभेसर हे के नाक यने भिनवाडिं ।
 होरी के स्वाद यभाडिं ॥ आ० ॥ लाल गुलाब आदल
 छाडिं रंग को मेह परसाडिं । पीर अपीर की अणुली ज-
 म जम यमयम यम यमकाडिं । धमार मलार सी गाडिं ॥
 आ० ॥ डेसर कीय कपोल लगाडि तन मन हार पटाडिं ॥
 नागर अंग अनंग लगनडि यरन पंसि अलि जलडि । श्रमा
 अपराध कराडिं ॥ आण कहुं मोहन पाडिं, डैसी होरी दि-
 भाडिं ॥ १ ॥

होरी

अण में फिर थीन अणु हे । टेक । १ । हिले थीन सुनीन्ते
 राधे आधी मुध आधे ७ हे । अण न्ते थीन सुनी प्रं स्या-
 मा मेरे जन न ७ हे । आगे नदिनी भरलु हे । १ । धे

रस रंग सुड रही हे ललिता बाण तणे हे । तनक बनक सुन
 पीन प्रपीना अनको जत भणु हे । नेक हियरे न लणुहे
 ॥ अ० ॥ या पीने वृंण्यनितन पर मेनकी सेन सणु हे ।
 भारत तान पान सम कस कस लेत सराशर लुहे । अग्नि
 कसी डिपणु हे, अ० ॥ अरणेगी अरणे नन्दनंदनको वाते
 कदा गरणु हे । ओर लव निरलव जमत नड सणुवन
 हरणु हे । वाहो ते कर अरणु हे, अ० ॥ जे होगी सो हाय
 रहेगी जेहि अग्नि अग्नि सरणु हे । तु नागर नागर प्रलु
 पगपर परत सदा यिरणु हे । यहो दीनो अरणु हे । प्रण
 मे द्विर पीन अणु हे ॥ २ ॥

होरी

सांवरे तोसो अरणु हमारी । टेक । अरमासुर वरदान पाय
 के मनमें कपट अियारी । अरमासुर को अरम कियो तुम
 पल में आय मुरारी । अिया शिव लु की टारी । (सां०)
 जनकनन्दनी हरि लंकापति मान कियो अति लारी,
 रावन भारि गरद करि डारयो सुवरणु लका नारी । लछ
 तीलुं पुर डियारी (सां०) दृष्ट दृसासन थीर धसीटत
 कृष्णा जेअ पुकारी । नगन द्रुपदि कालु न देणी अम्बर
 दियो हे पीलारी दृष्टि करना सो निलारी (सां०) केशि
 मारयो कंस पछारयो पटक पुतना डारी । जन हरयरन
 अरन अलिदारी टरिहे अिपति हमारी । पडो लु में शरन
 तिलारी । सांवरे तोसो अरणु हमारी ॥ ३ ॥

होरी

अवधपुर धुममयी होरी जेसत राजकुमार ॥ टेक ॥ राम
 लच्छमन भरत शत्रुघन करि रहे अण्य अछार । छत ते
 लछ जनकनन्दनी कर पियुकारि संभार (अवध) रघुपति
 हरिअ निरअि सिध मुअ को दियो गुल्लक अफ हारे

साज लरी त्रीभोवन महारानी करत रंगडी भार (अवध)
रति रत्ना अडि करत अय्य्या महन गयो मन हारा
कहे हरयरन होडिन डी छमि लमि भगन सयै नरनार
अवधपूर धुममयी होरी भेलत राजकुमार ॥ ४ ॥

होरी

होरी कुंजन आंगु लघ श्याम श्यामभो ॥ टेक ॥ आल^१
आल गुथ संभ मोहन ली-हो करि करि साज नघ)
ग्यासिनि लुभ सिंगार साछ के राधे साधे लघ (श्याम
नायत श्याम नयावति राधे लसि लसि ताल दध । विश्व
इप छमि हेरत हरि के सय सपि श्याम लघ श्यामा
श्याम सो होरी कुंजन आंगु लघ ॥ ५ ॥

होरी

अजमे जनि आनुं असो री ॥ टेक ॥ ग्यात्र सभा सय
संग लियो हे दुंदुत फिरत सय जोरी । जेदि पावन ते
रि रंगमे आरत अदियां पकर अकजेरी । भोल द्रग डित
यित लो री (ब्रज) धेर लियो हरि सय सपियन भिल
राधा भलत मुभरो री । विश्व इप छमि देपि श्याम डी
अति आनंद अढो री । लजे यल भेल मयो री । (ब्रज) ६

होरी

छेला कामेमे भेसोंगी द्वाग । टेक । तुम तो यसे पर देश
पियारे जम कलक गुन लाग (छेला) तुम भिन को यल मा
यन हारी मेरी प्रेम को आग । जय यल पेड भयेन लये
रे नाथ साज तजि लाग । छेला कामेमे भेसोंगी द्वाग ॥ ७ ॥

होरी

साज डी अनियां अय न सहुंगी । टेक ॥ जो तुम जोडी
अरी हरी कलिहो अक डी लापन मेहुं कहुंगी (साज) जे
अय्यत्रा तुम मेरी गहोगे मेहुं तेरो सिर पाग गहुंगी ।

चोटी पकड़ यमोटी अनध है, वाही कइंगी में जे ७ यहुं
गी (लाज की) जे तुम लोल कपोल परसिहो तो युटकी
भरी नांक धइंगी । जे अगिया पर हाथ यसेहो हाथ छो
डे पिन में न रहुंगी (लाजकी) दुर से पात करो मन मे
हन सभ सुभ में याही मे लहुंगी। जे लपि लेहै नाथ
आज कहुं तो जमुना पीय जय अहुंगी (लाज की) ॥८॥

सवैया

भो मनमें निहये सजनी यह तात हुंते प्रन भेरो मला
है । सुन्दर श्याम सुमन सिरामनि सो हिय में रमि
राम रहा है ॥ रीत पतीप्रत रापि युकी मुष भाभ
युकी अपनी दुलहा है । याप निगोडा अगै जरि नह
यढो तो कहा न यढो तो कहा है ॥ १ ॥

सवैया

टुटतही धनु के मिलि मंगल गाछ उठी सगरी पुर आ
ला । ले यती सीतहि राम के पास सगै मिलि मन्दमराल
की आला ॥ देषत ही पियको हरियन्द मला मुद पुरित
गात रसावा प्यारी ने आपुने प्रेम के नल सी प्यारे के
कठ दृष्ट जे भाला ॥ २ ॥

सवैया

अेक हें गौतम नारी के तारक कौसिक के भय के भय
के रभ्वारे । कउसीला नन्दन नेन आनंदन अेध है प्रान
ण्डावन हारे ॥ प्रेमिन के सुभ देन मला हरियन्द के
प्रान हु ते अति प्यारे । राजदुलारी सिया ण्ड के दुलह
अेध है राधव राजदुलारे ॥ ३ ॥

सवैया

गार लसे उत भोरी उते उपमा छकहुं नही जत लडी
 हे । इसरी आगी अनो होउ के छत यन्त्रिका याइ उते कु
 लडी हे ॥ मेहेदी पान मढापरै सों हरियन्द मढा सु
 भमां उलडी हे । खेहु सभै द्रग को इल देअहु दुलढ
 राम सिया दुलडी हे ॥ ४ ॥

सवैया

दुलढ त्यों दुलडी को गुवां सभियान लई सिवि जेलावन
 लागी । लघ मुकता भनिमानिक हीरन पानि उछावन
 लागी सोहागी ॥ श्री रघुराज जिदेह लकी तहं होहुन डी
 दुगुनी दृति जगी । मानो हजरन तारन को रभियंद
 धारन लागे सुरागी ॥ ५ ॥

सवैया

गावती गर्भ गहे गुन को मृद गीतन गोरी सु दधव हुं
 गारिन हारे लला अय्य हारे लला अस भापती देती
 तियां अहु तारिन श्रुती हमारी लकी रघुराज मगाओ
 द्रतघ अनुंज मुनि प्यारिन । नातो भियार के आत
 जिदेह जोलार्थ हे रावरेको महत्तारिन ॥ ६ ॥

सवैया

आतुरो यातुरी लुवि गध सय मोहनी रुप कीरीत परानी ।
 रावरे को इगियो रह्यो आवत आपुरे आपरे को पहियानी
 जनकी जनी हती न सुजन लगे गुवा जेवन श्रुतडी
 जनी यंयलता न यकी रघुराज करी यकी सो जे छटी
 छल छानी ॥ ७ ॥

सवैया

कटे कसे कटि में यटकीने मण्डले महीष लखा हे अतोपे
 योलडे त्यों मुकतःकृतं भाव सुतारावली-छमि छीने अहोपे
 भेवन द्वाग सन्ने रघुराज सुराज कुमार मछा यितयोपे ०
 अंगनी अंग उमंग भये जिन जेहूत होत अनंग के
 धोपे ॥ ८ ॥

सवैया

द्वेषि सभ्नी सभ्नी राजकीसारन यितके योरन सो अनुरागी
 आने अन्नवन लागी अनेकन गावन लागी धमारि सुरागी ॥
 आये त्रला अम्न आये लखा अम्न जन न पावे सभान
 लई भागी । श्रीरघुराज को धाय धरे अकि अरि के ओरीन
 संगहि लागी ॥ ९ ॥

सवैया

कोई गोरी कही कटि के न रङ्गो जी लगे आप के
 पांछहोना । मोहि आनि कीसोरी की के अरजेरी अन
 छहों छोरी अयार्थ होना ॥ तुम योरी करी यीतकी रघुराज
 लखा जे कहु भगी नछहो ना । अज अजारी के ओरी
 गु मेरों मुअ तो सिया सभ्नी ईरी कछाईहों ना ॥ १० ॥

सवैया

सो सभ्नि नागरिकी सुन आत दियो हरि हेरि हरै मुस
 काध । कोई सुन्नन सभा कखो नर्म कहुं रघुअसिन हार
 न पार्थ ॥ तुं कहे कसे वृथा अरी जैन धते पियकारिन
 की अरि लार्थ । हे रघुराज सभा अिज्ज अिजे पाथ के जे
 निसान अज्ज ॥ ११ ॥

સવૈયા

કાગળ તો ના ઉઠે કર તે લિખની કર કંપિત કોન ઉઠાવે
લાલન દ્રષ્ટિ પરે જળ્ય તે વહ નાંમ સુને અંસુવા ઝર લા
વે ॥ પ્રેમ સખી મધુકી મખિયા મન જ્ય કસ્યો હિરુ
હાથ ન આવે । મુક્તિ શ્રી રઘુનંદન કી લિખતે ના બને
લખતે બનિ આવે ॥ ૧૨ ॥

સવૈયા

સીતા કથા સુનિ કે દસકન્દર બેજ્યો મરીચી કુરંગ બનાઇ
જનકી કી રૂપ રાખન કે લિત લઈ ધનુબાન ગયે પ્રભુ
ધાર્ઠ ॥ દોરત દુર દુરાત દેખાત લેવાઈ ગયો રઘુનાથે લો
ભાઇ । જનિ ખલે તેહિ નાથ દલ્યો સર તે જિમિ દક્ષ
કો અક્ષ રિસાઈ ॥ ૧૩ ॥

સવૈયા.

આપને હાથસોં દાહ કિયોં બે ગયો મરી જનકી હેત
જટાઈ । ત્યોંહી કબન્ધકી સાપ છોડાઈ સરોવર મેં સ
વરી ફલ ખાઇ ॥ મિત્ર બનાઇ સુકંઠ કપીસ કે તાલકિ
બેધ્યો સુ બાન ચલાઇ । બાલિ કો મારિ કે બાલિ કે બં
ધુત્ર બાલિ કો રાજ દિયો રઘુરાઇ ॥ ૧૪ ॥

સવૈયા

દીપક જરી ધર્યો મક બીતર સુન્દર શ્યામ સખાઉ જિયારી
આરૂ ચકોર ચહુંદિસિ ખોલત નાગ પયાસ ગરે મુખ બ
રી ॥ બેલ ચડે ઉમરૂ કર સોહંત ગંગ તરંગ જટા સિર
ધારી । તો સદા શિવ ધ્યાવત હોં કૈલાશપતી પતિ રાખુ
ગરી ॥ ૧૫ ॥

(४४)

सवैया

गंग कहे में इद्र करों गज यर्म के आल. अरु प्याल ग.
में । कालिन्दि भाषत कान्ह करों अजमंडल के सिर
छत्र धरे में ॥ सारदहू कहे अल करों धनश्याम यतुर
मुष्प भेद भरे में । पापी भरयो अक जेनी में आय के
इर परयो उनके जगमें ॥ १६ ॥

सवैया.

ज नन अक सु कोस के भीय में थावर जंगम जे अ
पु डारे । त्यों त्यों लहे निरयन ततक्षन अक्षन ते द्विज
राम निहारे ॥ गौरि के छश कृपा करि के तहां ताउक मन्त
सुनाय के तारे । प्रभी पुरी सीन अर पुरी तिहुं लोक
में कीरति भेद पुकारे ॥ १७ ॥

सवैया

हेम पनाके रथे इदरें त्यों लजरन मत मतंग तुरंगा ॥
त्यों कनके कवये पहरे भट राम के हेभन छाये उमंगा ॥
आर वधु करें मंगल गान लिये धट मंगल साछ के
संगा । आरही आर यिलों के यिमान भयो तिनको छन कल्प
अभंगा ॥ १८ ॥

सवैया

सुभ जोग महुरत साधि धडी कपि काव्य करे पढि अस्तुति
ते । कामना पुरणु तुं कर हेत जहां लागि हें जग
में सय धेरी ॥ आन के हांय इमारो लग्यो भव सागर
पार करे अहि मेरी । मेः पूकारत आरत हे जगदभ्य
दय करि ले सुधि मेरी ॥ १९ ॥

सवैया

ऐसो परयो जग के परपंच में पुन करी नहिं रंचक
तेरी । तो कृपया करि पायो अराम सो नामना तेरो लि
यो ऐक जेसी ॥ काम में क्रोध में लोल में मोह में गान
हुंने मदने मत घेरी या कलिकाल के आपत में पत रा
भियो पारवतीपति मेरी ॥ १८ ॥

कवित

सेवकन भंडे दुष्प दारिद्र्य गिहंते अरदायक अप्पडे अंउछ
दुरजन कडा कहे । राजे सिर यन्दे मधवादि सुर यन्दे छां
डि छांडि छल छन्दे पद पंकज सदा गहे ॥ ओडी कपि ला
ल ऐसे सधलके सुता के सुत मेरे दुष्प भाने नही अवगुन
कडा गहे । लीने धनुं सायक असुररि कुल धायक सो ऐसे
गननायक सहायक सदा रहे ॥ १ ॥

कवित

मोहन मन भूस पर मोहित गणेश वेश गिरा हंस उपर
सरस सुभभासनी । प्रेम भरे आछे हर कुट कैलाश प
र सिंह पर गिमल भवानी दुष्पनासनी ॥ गिधि जैठि
रच्यत नरायणु कमल पर भारी वैकुण्ठ पर रमा सुभरासनी ॥
गुह गुणु सखित गोविन्द हे इनिन्द पै गिन्द पै गिसद गि
राजे गिन्द आसनी ॥ २ ॥

कवित

सरन गये सदा गोप के समान करत जेत जगे नकी रच्य
ना न नेक न्यारी हे । क्रोध हो को कंस के अंस को गिरां
स कीनी थाप करि दीन्यो हे गिभीशन राज भारी हे ।

गाथ कृषि कहत जकी कलाके न कारापार जगमे अपार हु
ति जगे उज्यारी हे । यमुदा दुवारी सो तो हिये ते न
होत न्यारी अष्ट लुग धारी सो हमारी रंभवारी हे ॥३॥



कवित

सो मुष्पी सहस्र मुष्पी लक्ष मुष्पी डोटी मुष्पी अर्ध अर्ध
मुष्पी सदा गाजते रहत हे । जनत कर्मिन्द लुग भारे
अस्त्रधारे दल दैतन दलन के तराजते रहत हे ॥ तीन लो
क उदर में राशि के गुदर करे कुदरत कौतुकी कला काजते
रहत हे । राजते रहत शोभा साजवे रहत जन आपने
के अभिष्ठा नेवाजते रहत हे ॥ ४ ॥



कवित

अेक ओर भांग मुक्तान की संवारी ऐनी अेक ओर सेन
सेत सुरसरी धार हे । अेक दृग अंगन अनल दृग दुस
रेने अेक कान हार अेक कुंडल सुहार हे ॥ अेक कति अस
न करि कीकत अेक ओर आघे मुंडमात्र आघे हीरन के
हार हे । आगिसे यरलु में मधुर धुनि तुपुर की पाछिसे
यरन में इनी की श्रुंकार हें ॥ ७ ॥

कवित

सोहत अनुप लाल पालयन्द दुधज के हरिपद जयमान
गंग सिर धारे हें । कर में कराल शुब लीन्हे सुल नास
न के उमर अजवे मुष्प सिंगी धुधुकार हे ॥ कहत उदा
र नीत्रकठ गर मुंडमात्र लोयन विशाल लाल कामदेव ज
रे हे । देवलि उयारे विश जरत निहारे भारे काशीपति
वारें सो हमारे रंभवारे हे ॥ ६ ॥

कवित

अमल कमल सम यरन हरन मल मन मह जपत अम
र जयकार कर । रजत परन सम लसत गरल धर लपत
अलन दल हरत थर थर ॥ महन सकल अस करत अ
यर यर करत अयर उर धरशत धर धर । हरहर अंगन
करत अल अग अत्र दरद न रहत कलत हर हर हर ॥११



कवित

शिव जटा भ्यान ते कठी हे सैल सान यठी मठी मुठ पु
नि कर्ति करार हे । अनत प्रसन धरयो सोकल अगीर
थ गु यमके यहुं दिसान महिमा अपार हे ॥ हेमे पर
भारथी पुनीत अश्व पारपी ने ज्ञानी अट बीर ध्यानी क
रत अियार हे । अध अरि अश्वथ सुंथ गुंथ मत्थकारी
वे कामानो सुरसरी धार आधी अरग धार हे ॥ ८ ॥



कवित

शास्त्र को अयार हे अियार यार अेदन को अस हे प्रता
पी अगीरथ नरेस को । मुनिन को धाम अस्थान मुंठत
पिन को पान सुधा रस को यह गान हे गनेस को ॥ अुध के
प्रकार प्रतिहार अल्ल लोक ही को दुअ वन्द काटिवे को तेज
हे दिनेस को । अ्यान कअिसार गिरिशज की कुमारिका के
गंगा के प्रवाह मोर भासा हे महेश को ॥१॥



कवित

तारे केते पतित उधारे केते अधमन को मुंठत को सुधारे
अंग अिमल करि डारे हे । जमपुर उजारे जमदुतन नि
करे जसों अित्र गुप्त डार अेके रुप हो अियारे हे ॥ ३३

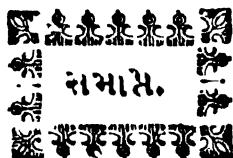
देनदारे सय रहे गमभारे दियो तुंरत नगारे बीर पान्
क की टारे हे ॥ गुंगा के यरित्र न्यारे दास कडत ललकारे
तेरे ध्यान धारे तिन ज्योये पाप सारे हे ॥ १० ॥

— — —
कवित

ज दिन ते देवनदी आरि मडि मंडलमें ता दिन, ते न
भगत के मुल गसि लाध हे । पापिन के पाप को रयेक न
दि रहन हेत जरि हेत जेसे तुंल आग किकाध हे ॥ कडत
केदार ऐक पुन्दरुं किम्मे जे पान आलसहुं क्षीने नाम सुर
पास पाध हे । गिधिवत नडाई मन लाध गुग पुज करे
ताके इल कडिमे को सारदा युपाध हे ॥ ॥ ११ ॥

— — —
कवित

सुर सरी कहे मे तो करोंगी महेस याही याकी प्रीत रीत
मे में गात के पभारे की । सारदा वभाने यह कमल मे
दि में ही लेन कालिन्दी कहे कान्ह करोंगी सकारे की ॥ उधी
नाथ न्दात हे वीमेनी लु के संगम मे मडिमा अपार मे
दि मादि देह धारे की । जे लो तरे तरे तों लो जगरा
अंजट मे अयेया अयेयी हो रही वा पातकी गियारेकी ॥ १२ ॥



જ હેર ખખર.

અમુલ્ય લાભ ગુમાવતા નહીં!

લોક પ્રિય વાંચવા લાયક, ખોષ દાયક, અતિ રસીક વારના-
ઓ. ગાયન, હીસાબ ગણીતનાં પુસ્તકો જથ્થાબંધ અને છુટક
નીચે લખેલે ઠેકાણેથી મળશે. બહારગામના ગ્રાહકોને પોષ્ટેજ
તથા વેલ્યુપેએબલનો ખરચ વધારે પડશે.

પુસ્તકોનાં નામ.

ક્ર. ર. આ પા.

જૈન વિવેક વાણી યાને જૈન ધર્મ સાર સંગ્રહ...	૩	૦	૦
જૈન જ્ઞાન પ્રકાશ કથા સંગ્રહ ભાગ ૧-૨ દરેકના	>	૮	૦
જૈન કથા સંગ્રહ ભાગ ૧ લો...	૧	૦	૦
જૈન દીપક સ્તવનાવલી	૦	૪	૦
જૈન કથા સંગ્રહ ભાગ ૨	૦	૪	૦
ગોળ લાકડાના ગજ દોરીના હીસાબની પુક	૧	૦	૦
પગાર ગણીત...	૦	૬	૦
લોક પ્રીય કથા સંગ્રહ ભાગ ૧-૨ દરેકના	૦	૬	૦
ગરબા સાર સંગ્રહ...	૦	૪	૦
લોક પ્રીય ગાયન રસ ભાગ ૧-૨-૩-૪ દરેકના	૦	૪	૦
લોક પ્રીય કપ્પીર પદ સંગ્રહ	૦	૪	૦
વેળ્યવ ધર્મ પ્રકાશ રાગમાળા ભાગ ૧	૦	૪	૦

મુખ્ય—કાલ્યાણદેવી—પડિત જ્ઞેષ્ઠારામ મુકુંદજી

અમદાવાદ—ગુજરાત વરનામયુક્તર સોસાયટી—રાજકોટ

લાખમીચંદ ઉત્તમચંદ—લાવનગર—જૈન ધર્મ પ્રકાશ સભા.

ગેલાભાઈ લીલાધર.

ઠેકાણું—કચ્છ મહારાઓશ્રી ખેંગારજી લાયબ્રેરી

મુખર્ષી માંડવી ખંદર.

